हिन्दी पाक्षिक

सेमन्या कण्वघाटी

RNI No.: UTTHIN/2013/54659

वर्ष-12 अंक-04 हरिद्वार, बुधवार, 01 जनवरी, 2025 मूल्य-दो रूपया मात्र पृष्ठ-8

शीतलहर से बचाव के लिए बरती जाए पूरी सतर्कता : सीएम

देहरादून,संवाददाता । प्रदेश में शीतलहर से बचाव के लिए सभी प्रभावी उपाय किये जाएं। शीतलहर से बचाव के लिए पूरी सतर्कता बरती जाए। यह सुनिश्चित किया जाए कि जनपदों में रेन बसेरों में ठहरने वालों के लिए सभी आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध हों। शासन के वरिष्ठ अधिकारी और जनपदों में जिलाधिकारी और पुलिस अधीक्षक रेन बसेरों की व्यवस्थाओं का समय-समय पर निरीक्षण करें। शीतलहर के दृष्टिगत जरूरतमंदों को कंबल, दस्ताने, मौजे और अन्य आवश्यक सामग्रियां उपलब्ध कराई जाए। जनपदों में रात्रिकाल में जिन स्थानों पर अलाव की व्यवस्थाएं की गई हैं, उसकी लोगों को विभिन्न माध्यमों से जानकारी भी दी जाए। मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी ने ये निर्देश सचिवालय में शीतलहर से बचाव के लिए विभागों द्वारा किये जा रहे कार्यों की समीक्षा के दौरान अधिकारियों को दिये।

मुख्यमंत्री ने कहा कि यह सुनिश्चित किया जाए कि बर्फवारी के कारण सड़के अधिक देर तक बाधित न हों, जिन क्षेत्रों में बर्फवारी अधिक होती हैं, उन स्थानों पर सड़कों से बर्फ हटाने के लिए आवश्यक संसाधनों का उचित प्रबंधन किया जाए। उन्होंने जिलाधिकारियों को निर्देश दिये कि शीतकाल के दृष्टिगत जनपदों में गर्भवती महिलाओं का सम्पूर्ण डाटा रखा जाए, ताकि किसी भी आपात परिस्थिति में उन्हें, यथाशीघ्र चिकित्सीय सुविधा उपलब्ध कराई जा सके। शीतलहर के दृष्टिगत निराश्रित पशुओं के लिए भी आवश्यक व्यवस्थाएं करने के निर्देश मुख्यमंत्री ने दिये। बैठक के दौरान उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिये कि राज्य के विभिन्न क्षेत्रों में चल रहे सड़क निर्माण के कार्यों में तेजी लाई जाए। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने शीतलहर से बचाव के लिए जनपदों में की गई व्यवस्थाओं के बारे में सभी जिलाधिकारियों से जानकारी ली।

मुख्यमंत्री ने बैठक में अधिकारियों को निर्देश दिये कि यह सुनिश्चित किया जाए कि सरकार की योजनाओं का लाभ पात्र व्यक्तियों को ही मिले। सभी जिलाधिकारी भी सुनिश्चित करें कि सरकारी योजनाओं का कोई भी व्यक्ति गलत तरीके से फायदा न उठाये। बद्रीनाथ, केदारनाथ, यमुनोत्री और गंगोत्री के शीतकाल प्रवास स्थलों और उसके आस-पास के क्षेत्रों में श्रद्धालुओं की सुविधा के दृष्टिगत सभी आवश्यक व्यवस्थाएं करने के निर्देश भी मुख्यमंत्री ने दिये हैं। उत्तराखण्ड में आयोजित होने वाले 38वें राष्ट्रीय खेलों के सफल आयोजन के लिए उन्होंने सभी विभागों को समन्वय के साथ कार्य करने और विभागों को व्यक्तिगत जिम्मेदारी के साथ कार्य करने के निर्देश दिये हैं।

बैठक में सचिव आपदा प्रबंधन श्री विनोद कुमार सुमन ने शीतलहर से बचाव के लिए राज्य में किये जा रहे विभिन्न कार्यों की प्रस्तुतीकरण के माध्यम से विस्तार से जानकारी दी। बैठक में राज्य आपदा प्रबधंन सलाहकार समिति के उपाध्यक्ष श्री विनय रोहिला, मुख्य सचिव श्रीमती राधा रतूड़ी, अपर मुख्य सचिव श्री आनंद बर्द्धन, प्रमुख सचिव श्री आर.के. सुधांशु, डीजीपी श्री दीपम सेठ, प्रमुख वन संरक्षक श्री धनजंय मोहन, सचिव डॉ. आर. मीनाक्षी सुदंरम, श्री सचिन कुर्वे, डॉ. पंकज कुमार पाण्डेय, गढ़वाल कमिश्नर श्री विनय शंकर पाण्डेय वर्चुअल माध्यम से कुमांऊ कमिश्नर श्री दीपक रावत और सभी जिलाधिकारी उपस्थित थे।

भाजपा ने मेयर पद पर किरण जैसल पर जताया भरोसा

हरिद्वार,**संवाददाता** । नगर निकाय चुनाव में भारतीय जनता पार्टी ने हरिद्वार नगर निगम महापौर पद पर निवर्तमान पार्षद किरण जैसल पर भरोसा जताया है। महापौर के लिए 18 से अधिक दावेदार मैदान में थे। आखिरकार पार्टी ने किरण जैसल के नाम पर मोहर लगा दी। किरण जैसल नगर निगम की राजनीति में सक्रिय रही हैं। पालिका के निगम बनने के बाद से वह लगातार पार्षद पद पर काबिज हैं। जबकि किरण जैसल के पति सुभाष चंद भी हरिद्वार की राजनीति का एक बड़ा नाम हैं। सुभाषचंद लगातार दो बार सभासद रह चुके हैं। नगर पालिका बोर्ड में नेता प्रतिपक्ष की भूमिका भी सुभाष चंद निभा चुके हैं। नगर पालिका से लेकर नगर निगम तक के बीस साल के सफर में जैसल परिवार एक बड़ी पहचान के रूप में जानी जाती है। सुभाष चंद नगर विधायक मदन कौशिक के करीबी नेताओं में से एक हैं। बीस वर्षों से लगातार नगर निकाय राजनीति में सक्रिय जैसल दंपति और राजनीतिक अनुभव ने भाजपा संगठन का विश्वास जीत लिया। जैसल परिवार नगर विधायक के चुनाव में अहम जिम्मेदारी निभाता रहा है। पार्टी में मजबूत पकड़ रखने वाला जैसल दंपति मृदुभाषी, मिलनसार और अपने सरल स्वभाव से लोगों के दिलों में अलग जगह बनाए हैं। महापौर सीट ओबीसी महिला के लिए आरक्षित होने के बाद से दावेदारों में किरण जैसल का नाम सर्वाधिक चर्चाओं में रहा। आखिरकार पार्टी ने निकाय राजनीति में उनकी सक्रियता को देखते महापौर जैसे प्रतिष्ठित पद के लिए उन्हें अपना उम्मीदवार बनाते कमल खिलाने का भरोसा जताया है। टिकट की घोषणा होने के बाद जैसल दंपत्ति के समर्थकों ने जमकर जश्न मनाया और एक दूसरे को मिठाई खिलाई। वहीं मेयर प्रत्याशी बनाए जाने पर किरण जैसल ने कहा कि वे और उनका परिवार लंबे समय से भाजपा संगठन से जुड़े रहे हैं. संगठन की ओर से सौंपे गए दायित्वों का निष्ठापूर्वक निर्वहन करते हुए क्षेत्र के लोगों को योजनाओं का लाभ दिलाने और संगठन की रीति नीतियों के प्रचार-प्रसार में भी योगदान किया है. यही कारण है कि भाजपा ने उन पर विश्वास जताया है. उन्होंने कहा कि जो विश्वास बीजेपी ने और हरिद्वार की जनता ने हम पर जताया, उसकी वह आभारी हैं. किरण जैसल ने हरिद्वार हरकी पैड़ी कॉरिडोर के मुद्दे पर बोलते हुए कहा कि, जो भी केंद्रीय योजना होगी, उसको व्यापारियों के हित में लाने का कार्य करेंगी. नगर निगम जो भी कार्य पेंडिंग पड़े हैं. उन सब को पूरा करेंगे और हरिद्वार की जनता की सेवा करेंगी.

सभी प्रदेशवासियों को नववर्ष -2025 की हार्दिक शुभकामनायें।

-सम्पादक

बीजेपी और कांग्रेस के प्रत्याशियों ने कराया नामांकन

हरिद्वार,**संवाददाता**। उत्तराखंड नगर निकाय चुनावों में नामांकन का 30 दिसंबर सोमवर को आखिर दिन था। इसीलिए बड़ी संख्या में बीजेपी और कांग्रेस के प्रत्याशियों ने आज नामांकन किया। हरिद्वार नगर निगम सीट पर मेयर पद के लिए कांग्रेस और बीजेपी के प्रत्याशियों ने भी अपना-अपना पर्चा दाखिल किया। नामांकन के साथ ही प्रत्याशियों ने शक्ति प्रदर्शन भी किया।

आखिर दिन हरिद्वार नगर निगम में बीजेपी मेयर पद के प्रत्याशी किरण जैसल ने नामांकन किया। इस दौरान उनके साथ हरिद्वार शहर विधायक मदन कौशिक और हरिद्वार सांसद त्रिवेंद्र सिंह रावत भी मौजूद रहे। इस मौके पर बीजेपी सांसद त्रिवेंद्र सिंह रावत ने हरिद्वार और रुड़की नगर निगम के साथ-साथ लक्सर और शिवालिक नगर नगर पालिका पर भाजपा की जीत को सुनिश्चित बताया।

उन्होंने कहा कि भाजपा ने बहुत ही सुयोग्य प्रत्याशियों को मैदान में उतारा है, जो लोग जनता की सेवा करने में विश्वास रखते हैं। हरिद्वार नगर निगम सीट पर भाजपा ने जिसको टिकट दिया है, उसे 25 साल का जनता की सेवा का अनुभव है। इसलिए उनकी जीत भी सुनिश्चित है। वहीं, भाजपा प्रत्याशी किरण जैसल का कहना है कि वे जनता के बीच जाकर उनके लिए काम करेंगे और जनता की समस्याओं को सुनकर उसको हल करने का काम भी करेंगे। भारतीय जनता पार्टी की प्रत्याशी किरण जैसल का नामांकन रोशनाबाद में किया गया। भाजपा प्रत्याशी किरण जैसल के मुख्य निर्वाचन अभिकर्ता विकास तिवारी ने बताया कि भाजपा प्रत्याशी के नामांकन पत्र के कुल चार सेट जमा किए गए, जिनमें प्रस्तावक के रूप में मनोज गर्ग, ललित नैय्यर, अनिल कुमार कुमार और डॉ विशाल गर्ग रहे। बीजेपी के अलावा हरिद्वार नगर निगम से कांग्रेस के मेयर प्रत्याशी अमरेश बालयान ने आज नामांकन किया। उन्होंने कहा कि हरिद्वार में बनने जा रहे कॉरिडोर को लेकर वो व्यापारियों के साथ हैं और व्यापारियों के हित में इस कॉरिडोर को लेकर विरोध करेंगे। उन्हें पार्टी के साथ-साथ जनता का भी पूरा सहयोग मिल रहा है।

सम्पादकीय

चुनाव सुधारों की जरुरत

देश में हर साल चुनाव हो या हर छह महीने पर चुनाव हो यह सचमुच अच्छी बात नहीं है। लेकिन इसे रोकने के लिए %एक देश, एक चुनाव' का आइडिया भी ठीक नहीं है। इसका मतलब है कि हर छह महीने पर चुनाव की मौजूदा प्रक्रिया चलती रहे यह भी ठीक नहीं है और सारे चुनाव एक साथ कराए जाएं, यह विचार भी अच्छा नहीं है। इसलिए बीच का रास्ता निकालना सबसे अच्छी बात होगी। बीच का रास्ता क्या हो सकता है, उस पर विचार से पहले यह स्पष्ट करना जरूरी है कि भारत जैसे विशाल और विविधता वाले देश में एक बार में सारे चुनाव कराने का विचार लोकतंत्र की बुनियादी भावना और संघवाद की धारणा को कुछ न कुछ जरूर प्रभावित करेगा। भले यह लोकतंत्र या संघवाद के पूरी तरह खिलाफ नहीं हो लेकिन इन दोनों सिद्धांतों पर इसका निश्चित असर होगा। अगर सारे चुनाव एक साथ होते हैं तो संचार तकनीक के मौजूदा दौर में प्रदेशों के और विधानसभा स्तर के स्थानीय मुद्दे गौण हो जाएंगे। उसकी बजाय राष्ट्रीय मुद्दे अहम हो जाएंगे। अभी ही नरेंद्र मोदी से लेकर अरविंद केजरीवाल तक अनेक नेता ऐसे हैं, जो कहते हैं कि हर सीट पर वे ही चुनाव लड़ रहे हैं। यानी मतदाताओं को उम्मीदवार नहीं देखना चाहिए और नेता का चेहरा देख कर वोट करना चाहिए। एक देश, एक चुनाव' की स्थिति में यह विचार प्रमुखता पा जाएगा। उससे स्थानीय मुद्दों के साथ साथ स्थानीय नेताओं का महत्व भी कम होगा और छोटे छोटे काम कराने में भी आम लोगों को परेशानी होगी। इसके अलावा कई और व्यावहारिक समस्याएं आएंगी। जैसे समय से पहले लोकसभा या किसी राज्य की विधानसभा भंग होने पर वहां बची हुई अवधि के लिए चुनाव कराना होगा। इससे बार बार चुनाव की संभावना तो बनी ही रहेगी और साथ ही चुनाव खर्च में कटौती का तर्क भी ध्वस्त हो जाएगा। एक साथ चुनाव कराने से पहले लोकसभा के कार्यकाल के साथ राज्यों की विधानसभाओं की एकरूपता बनाना भी एक बड़ी तकनीकी कवायद होगी। तभी एक देश, एक चुनाव' के भारी भरकम कवायद में पडने की बजाय मौजूदा प्रक्रिया में सुधार करके इसे बेहतर बनाया जा सकता है। हैरानी की बात यह है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पिछले 10 साल से ज्यादा समय से एक देश, एक चुनाव' की बात कर रहे हैं लेकिन हर साल या हर छह महीने पर होने वाले चुनाव की प्रक्रिया को बदलने के लिए उन्होंने कोई ठोस पहल नहीं की। अगर सरकार और चुनाव आयोग चाहते तो अब तक देश में चुनाव की प्रक्रिया पटरी आ चुकी होती। हर छह महीने में चुनाव कराने की जरुरत ही नहीं रह जाती। इसके लिए बहुत छोटे छोटे बदलाव करने थे। दूसरी अहम बात यह है कि पूरे देश में एक साथ चुनाव कराने की बजाय दो चरण में चुनाव कराने का विचार ज्यादा व्यावहारिक है। लोकसभा के साथ आधे राज्यों के चुनाव कराए जा सकते हैं और बाकी आधे राज्यों के चुनाव दो या ढाई साल के अंतराल पर कराए जा सकते हैं। पांच साल में दो बार चुनाव का विचार इसलिए व्यावहारिक है कि दो बार चुनाव कराने में ज्यादा बोझ नहीं पड़ेगा और दूसरे अगर पहले चरण के किसी चुनाव वाले राज्य में या केंद्र में सरकार गिरती है और विधानसभा या लोकसभा भंग होती है तो अगले चुनावी चक्र के लिए लंबा इंतजार नहीं करना होगा।

भारत में आर्थिक अज्ञान का साया आज भी घना

फिर भी भारतीय की आर्थिक प्रगति का नैरेटिव पेश किया जाता है, तो उसे दुस्साहस ही कहा जाएगा। अगर इस कथानक को लोग स्वीकार करते हैं, तो उसका यही अर्थ माना जाएगा कि भारत में आर्थिक अज्ञान का साया आज भी घना है। वित्त वर्ष 2023-24 में कृषि पर निर्भर श्रमिकों की संख्या 25 करोड़ 90 लाख तक पहुंच गई। इसके पहले वाले वित्त वर्ष में ये 23 करोड़ 30 लाख थी। इस तरह 2017-18 से भारतीय अर्थव्यवस्था की पीछे की ओर शुरू हुई दौड़ ना सिर्फ जारी है, बल्कि उसकी रफ्तार और तेज हो गई है। इसे इसलिए पीछे की ओर दौड़ कहा गया है, क्योंकि हर विकसित अर्थव्यवस्था की दिशा यह रही है कि लोग रोजगार के लिए कृषि से उद्योग या सेवा क्षेत्र की ओर जाते हैं। विकसित होने का एक पैमाना यह दिशा भी है। आंकड़ों के मुताबिक 2004-05 से 2016-17 तक भारत भी इसी दिशा में बढ़ रहा था। उस दौरान कृषि पर निर्भर श्रमिकों की संख्या में छह करोड़ 60 लाख की गिरावट आई थी। उसके बाद दिशा बदल गई। यहां पर इस ओर ध्यान खींचना उचित होगा कि 2016 वह साल था, जब नोटबंदी लागू की गई। साल भर बाद उसके प्रभाव जाहिर होने लगे। उस वर्ष (2017-18) भारत में कृषि निर्भर मजदूरों की संख्या 19 करोड़ दस लाख थी। तब से ये तदाद लगातार बढ़ी है। अब तक इसमें कुल छह करोड़ 80 लाख की वृद्धि हो चुकी है। इस तरह यह साफ है कि 2004-05 से 2016-17 के बीच जो प्रगति हुई, वह पलट कर अब नकारात्मक हो चुकी है। यह भी रेखांकित करने का पहलू है कि इस दरम्यान जिन राज्यों में यह बढ़ोतरी सबसे ज्यादा हुई, वे उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार और राजस्थान हैं, जिन्हें कभी अपमान भाव के साथ बीमारू कहा जाता था। दूसरा ध्यान खींचने वाला पहलू यह है कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर निर्भर श्रमिकों के बीच महिलाओं की संख्या तेजी से बढ़ी है। भारतीय वर्क फोर्स में महिलाओं की स्थिति पहले भी बेहतर नहीं थी। मगर गुजरे सात वर्षों में यह बदतर होती गई है। इसके बावजूद भारतीय की आर्थिक प्रगति का नैरेटिव पेश किया जाता है, तो तथ्यों की रोशनी में उसे दुस्साहस ही कहा जाएगा। अगर इस कथानक को लोग स्वीकार करते हैं, तो उसका यही अर्थ होगा कि भारत में आर्थिक अज्ञान का साया आज भी घना है।

भारतवर्ष के लिए कैसा रहेगा 2025

ज्योतिषाचार्य डॉ मंजू जोशी

सभी सनातनीय पाठकों, धर्मावलंबियों को नमस्कार, प्रणाम, जै माता दी आप सभी को आंग्ल नव वर्ष **2025** की हार्दिक शुभकामनाएं।

समस्त ब्रह्मांड की ग्रह अधीन व्यवस्था प्रतिवर्ष नवीन रूपों को प्राप्त करती है, जैसी पद व्यवस्था प्राप्त होती है वैसी ही सांसारिक व्यवस्था निर्मित हो जाती है। सौर मंडल की नैसर्गिक पद व्यवस्था में राजा सूर्य, मंत्री गुरु-शुक्र, मंगल सेनापति, बुध युवराज आदि पदों पर व्यवस्थित हैं परंतु ग्रह, नक्षत्र गणना के अनुसार प्रतिवर्ष यह व्यवस्था परिवर्तित होती रहती है यह परिवर्तन ही ब्रह्मांड को नवीनता प्रदान करता है।

आइए जानते हैं **2025** में भारतवर्ष पर ग्रह नक्षत्रों का प्रभाव कैसा रहेगा —

2025 का आगमन बुधवार को उत्तराषाढा नक्षत्र में हो रहा है। नव वर्ष पर सूर्योदय के समय चंद्रमा मकर राशि में, गुरु वृषभ राशि में वक्री, बुध ग्रह वृश्चिक राशि तथा शनि कुंभ राशि में चलित रहेंगे। हिंदू पंचांग के अनुसार इस वर्ष राजा सूर्य एवं मंत्री भी सूर्य देव ही होंगे।

वर्ष 2025 में 4 बड़े ग्रह राशि परिवर्तन कर रहे हैं। 29 मार्च 2025 को शनि का गोचर मीन राशि में होगा, जिससे अनेक राशियां प्रभावित होगी, मेष, मीन और कुंभ राशि में शनि की साडेसाती का प्रभाव तथा सिंह व धनु राशि में शनि की ढैया प्रारंभ होगी। 14 मई 2025 को बृहस्पति का गोचर मिथुन मे और 18 मई 2025 को राहु एवं केतु का गोचर कुंभ और सिंह में होगा।

2025 में भारत में आपको अनेक उतार-चढ़ाव देखने को मिलेंगे। भारत विश्व पटल पर ज्ञान, विज्ञान, शासन, प्रशासन के स्तर पर विशेष स्थान प्राप्त करेगा। विश्व के अनेक देश भारतवर्ष के साथ व्यापारिक संबंध बनाने को उत्सुक रहेंगे। वैश्विक व्यापार में विस्तार होगा। भारत का धनकोष एक ओर वृद्धि प्राप्त करेगा, दूसरी ओर इस वर्ष में राष्ट्रीय कोष को हानि के योग भी हैं, भारत पर ऋण का भार भी बहुत तेजी से बढ़ेगा। राष्ट्रीय आय में सीमित बढ़ोतरी और राष्ट्रीय व्यय वृद्धि को प्राप्त करेगा। इस वर्ष सरकार की कठोरता आम जनमानस को व्यथित करेगी। उत्तर-पश्चिमी देशों में राजनीतिक संकट गहराएगा। भयानक विस्फोटक वातावरण से आंतरिक अशांति बनेगी। विश्व के प्रमुख देशों के मध्य युद्ध का भय बना रहेगा। विश्व के विभिन्न राष्ट्राध्यक्षों में परस्पर वैमन्यता कारण निरंतर युद्ध जैसी स्थितियां बन सकती हैं। अनेक देशों में प्राकृतिक प्रकोप से जन धन हानि होने की संभावना।

व्यापार के दृष्टिकोण से 2025 भारतवर्ष के लिए अत्यंत शुभ फल कारक रहेगा। भारत विश्व भर में व्यापार के माध्यम से नए आयाम स्थापित करेगा। विदेशनीति के कारण भारत विश्व विख्यात होगा। व्यापारिक दृष्टिकोण से पर्यटन के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त होगी। आम जन मानस के लिए रोजगार के सुअवसर प्राप्त होंगे तथा आय में बढ़ोतरी होगी। सभी व्यापारी वर्ग को वर्ष भर आय में उतार चढाव देखने को मिलेंगे परंतु नौकरी पेशा वर्ग हेतु वर्ष उत्तम फल कारक रहेगा।

मौसम के दृष्टिकोण से यह वर्ष मध्यम फल कारक रहेगा। विश्व के अनेक स्थानों पर अग्निकांड एवं बम विस्फोट, आग्नेय अस्त्रों का प्रयोग प्रचुरता से होता दिखाई देगा। आंधी-तूफान, खंडवृष्टि और भूकंप आदि प्रकोपों से आम जनमानस का जीवन अस्त-व्यस्त रहेगा। वर्षा की कमी के कारण सूखे की स्थिति उत्पन्न होगी। अन्नोत्पादन भी मध्यम रहेगा। विघ्न बाधा, चोर भय,विपत्ति दंगा फसाद, फसल को हानि पहुंचाने वाले उपद्रव-अतिवृष्टि, अनावृष्टि, जीव-जंतुओं, पक्षियों आदि से फसल को हानि एवं राष्ट्र में तनाव की संभावना रहेगी। उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश आदि पर्वतीय राज्यों में अधिक वर्षा के कारण भूस्खलन, भूकंप आदि समस्याएं उत्पन्न हो सकती है।

सुरक्षा के दृष्टिकोण से 2025 भारत वर्ष हेतु अनुकूल रहेगा-

देश की सीमाओं पर अनेक प्रकार के उपद्रव आतंकवाद का भय बना रहेगा। भारत के शत्रु देशों द्वारा बनाई गई योजनाएं विफल होंगी। भारत की कूटनीति सफल रहेगी।महंगाई नियंत्रित करने में शासन विफल रहेगा।

भारतीय राजनीति राष्ट्रवाद व धर्मनिरपेक्षवाद की दो धाराओं में स्पष्ट रूप से दिखाई देगी। धर्म के नाम पर आम जनमानस के मध्य बैर/घृणा का भाव उत्पन्न होगा।राष्ट्रवाद के नाम पर राजनैतिक दल सत्तासीन होंगी। रक्षा के क्षेत्र में भारत आत्मनिर्भर बनेगा।

स्वास्थ्य के परिपेक्ष से वर्ष 2025 सामान्य फल कारक रहेगा।

अनेक गंभीर बीमारियों का भय बना रहेगा। बाल्यावस्था के जातकों को गंभीर बीमारी का भय वर्ष के उत्तरार्द्ध में बना रहेगा जैसे - त्वचा रोग, उच्च रक्तचाप,ज्वरादि गंभीर रोग का प्रकोप हो सकता है।

पोस्टमार्टम रिपोर्ट में देरी पर पुलिस के खिलाफ धरने पर बैठे ग्रामीण

रुड़की । किशोर की पोस्टमार्टम रिपोर्ट में देरी का आरोप लगाते हुए परिजनों ने तेलीवाला के ग्रामीणों के साथ सोमवार को धनौरी चौकी में धरने पर बैठ गए। परिजनों का आरोप है कि किशोर की हत्या हुई है। जिसमें पुलिस ने अब तक कोई कार्रवाई नहीं की है। ग्रामीण करीब एक घंटे तक धरने पर बैठे रहे। पिछले मंगलवार को धनौरी के तेलीवाला गांव में आम के बाग में एक किशोर का शव पेड़ पर लटका हुआ मिला था। मृतक के पिता रमेश चंद का आरोप है कि पुलिस ममाले में ढिलाई बरत रही है। उनके बेटे की हत्या हुई है। जिसकी पोस्टमार्टम रिपोर्ट में भी देरी की जा रही है। उन्होंने कहा कि पुलिस मामले में हत्या का मुकदमा दर्ज करे। जब तक उनको इंसाफ नहीं मिलेगा वह धरने से नहीं उठेंगे। मामले को लेकर आरएसएस के पूर्व जिला कार्यवाहक अंकित सैनी ने भी पुलिस पर दबाव बनाने का आरोप लगाया।

उत्तराखण्ड शासन
युग पुरुष, उत्तराखण्ड के प्रणेता, जनप्रिय पूर्व प्रधानमंत्री
"भारत रत्न"
स्व. श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी
की जयंती पर समस्त उत्तराखण्ड वासियों की ओर से
शत-शत नमन
सूचना एवं लोक सम्पर्क विभाग, उत्तराखण्ड द्वारा जनहित में जारी | www.uttarainformation.gov.in uttarakhandDIPR DIPR_UK uttarakhand DIPR

सबसे बेहतर, विशिष्ट व पूर्णत: वैज्ञानिक है भारतीय कालगणना

-अशोक ''प्रवृद्ध''

वर्तमान में संसार के अधिकांश देश के लोग नववर्ष की शुरुआत आंग्ल कैलेंडर के अनुसार प्रथम जनवरी से करते हैं। प्रथम जनवरी को मनाया जाने वाला यह नववर्ष ग्रेगोरियन कैलेंडर पर आधारित है। आंग्ल कैलेंडर में समय का विभाजन वर्ष, मास व दिन का आधार पृथ्वी और चंद्र की गति के आधार पर किया जाता है। सौर वर्ष और चंद्रमास का तालमेल नहीं होने के कारण आरंभ में अनेक देशों में समय व पर्व-त्योहारों के निर्धारण में गड़बड़ी होती रही। समय का विभाजन ऐतिहासिक घटना के आधार पर करने का भी चलन है। ईसाई मत के अनुसार ईसा का जन्म इतिहास की एक निर्णायक घटना है, इस आधार पर इतिहास को दो हिस्सों में विभाजित किया जाता है- बी.सी. तथा ए.डी.। बी सी का अर्थ है- बीफोर क्राईस्ट अर्थात ईसा के पूर्व। यह ईसा के उत्पन्न होने से पहले की घटनाओं पर लागू होता है। ईसा के जन्म की बाद की घटनाओं को ए. डी. कहा जाता है, जिसका अर्थ है - अन्नों डोमिनी अर्थात इन द ईयर ऑफ आवर लॉर्ड। लेकिन विचित्र बात यह है कि यह पद्धति ईसा के जन्म के बाद कुछ सदी तक प्रयोग में नहीं आती थी। वर्तमान के ईस्वी सन का मूल रोमन संवत है, जो ईसा के जन्म से 753 वर्ष पूर्व रोम नगर की स्थापना के साथ प्रारंभ हुआ। प्रारंभ में इसमें दस माह का वर्ष होता था, जो मार्च से दिसम्बर तक चलता था तथा 304 दिन होते थे। सबसे पहले रोम के राजा नूमा पोंपिलस के द्वारा रोमन कैलेंडर में बदलाव किया गया था। इसके बाद रोमन कैलेंडर में वर्ष का प्रथम महीना जनवरी को माना गया। जबकि पूर्व में मार्च को वर्ष का प्रथम महीना माना जाता था। इसके बाद रोम में आए एक शासक जूलियस सीजर ने 47 ईसा पूर्व में रोमन कैलेंडर में फिर बदलाव करवाया और इसमें अपने नाम के आधार पर जुलाई माह जुड़वाया। और एक वर्ष में 12 महीने करवाए। उसके भतीजे आगुस्तुस के नाम के आधार पर इसमें अगस्त माह जोड़ा गया। सीजर ने खगोलविदों के सलाह पर पृथ्वी के 365 दिन और छह घंटे में सूर्य का एक चक्कर लगाने के कारण वर्ष में 365 दिन का कैलेंडर बनवाया। वर्तमान में दुनिया भर में प्रचलित कैलेंडर को पोप ग्रेगोरी अष्टम ने 1582 में तैयार किया था। ग्रेगोरी ने इसमें लीप ईयर का प्रावधान किया था। ईसाइयों का एक अन्य पंथ ईस्टर्न आर्थोडॉक्स चर्च तथा इसके अनुयायी ग्रेगोरियन कैलेंडर को मान्यता न देकर पारंपरिक रोमन कैलेंडर को ही मानते हैं। इस कैलेंडर के अनुसार जॉर्जिया, रूस, यरूशलम, सर्बिया आदि में 14 जनवरी को नववर्ष मनाया जाता है।

पूर्व में नववर्ष 1 जनवरी को नहीं मनाया जाता था। पहले नववर्ष कभी 25 मार्च को तो कभी 25 दिसम्बर को मनाया जाता था। सर्वप्रथम नववर्ष के तौर पर 1 जनवरी को मान्यता 15 अक्टूबर 1582 को मिली थी। लेकिन आज तक यह कैलेंडर सम्पूर्ण विश्व में मान्यता प्राप्त करने में असफल ही रही है। और आज भी पूरी दुनिया कैलेण्डर प्रणाली पर एकमत नहीं हैं। आज भी दुनिया के अलग-अलग कोने में अलग-अलग दिन नववर्ष मनाए जाने की परंपरा कायम है, क्योंकि दुनिया भर में अनेक कैलेंडर हैं और हर कैलेंडर का नववर्ष का प्रथम दिन अलग-अलग होता है। एक अनुमान के अनुसार अकेले भारत में ही विक्रम संवत, शक संवत, हिजरी संवत, फसली संवत, बांग्ला संवत, बौद्ध संवत, जैन संवत, खालसा संवत, तमिल संवत, मलयालम संवत, तेलुगु संवत सहित 50 से भी अधिक पंचांग अर्थात कैलेंडर प्रचलित हैं, और इनमें से कई का नववर्ष अलग दिनों पर होता है। एक आकलन के अनुसार दुनिया भर में पूरे 70 नववर्ष मनाए जाते हैं। ग्रेगोरियन कैलेंडर के सर्वमान्य नहीं हो पाने का कारण इस कैलेंडर में विद्यमान गड़बड़ियाँ ही हैं, जो समय -समय पर उजागर होती रही हैं।

परंतु भारतीय पंचांगों में इस प्रकार की गड़बड़ियाँ नहीं रहीं, क्योंकि यहाँ ग्रहीय गतियों का सूक्ष्म अध्ययन करने की अतिप्राचीन परंपरा रही है तथा कालगणना पृथ्वी, चन्द्र, सूर्य की गति के आधार पर होती रही है। चंद्र और सूर्य गति के अंतर को पाटने की भी व्यवस्था अधिक मास आदि द्वारा होती रही है। भारत में सूर्योदय से सूर्यास्त तक दिन, माह और वर्ष की गणना करके भारतीय पंचांग बनाया गया है। जहां अन्य देशों में नववर्ष मनाने का आधार किसी व्यक्ति, घटना या स्थान से जुड़ा होता है और विदेशी लोग अपने देश की सामाजिक और धार्मिक परंपराओं और मान्यताओं के अनुसार इसे मनाते हैं, वहीं भारतीय कैलेंडर व नववर्ष ब्रह्मांड के शाश्वत तत्वों से जुड़ा हुआ है। ग्रहों की चाल पर आधारित भारतीय पंचांग व नववर्ष सबसे विशिष्ट और पूर्णत: वैज्ञानिक है। पृथ्वी अपनी धुरी पर 1600 किलोमीटर प्रति घंटा की गति से घूमती है। इस चक्र को पूरा करने में उसे 24 घंटे का समय लगता है। इसमें 12 घंटे पृथ्वी का जो भाग सूर्य के सामने रहता है, उसे अहन कहा जाता है। तथा सूर्य के पीछे रहने वाले भाग को रात्र कहा जाता है। इस प्रकार 12 घंटे पृथ्वी का पूर्वार्द्ध तथा 12 घंटे पृथ्वी का उत्तरार्द्ध सूर्य के सामने रहता है। इस प्रकार एक अहोरात्र में 24 होरा होते हैं। पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा 1 लाख किलोमीटर प्रति घंटा की रफ्तार से कर रही है। पृथ्वी का 10 चलन सौर दिन कहलाता है। चांद्र दिन को तिथि कहते हैं। जैसे एकम्, चतुर्थी, एकादशी, पूर्णिमा, अमावस्या आदि। पृथ्वी की परिक्रमा करते समय चंद्र का 12 अंश तक चलन एक तिथि कहलाता है। सम्पूर्ण विश्व में सप्ताह के दिन व क्रम भारतीय क्रम के अनुसार ही हैं। भारत में पृथ्वी से उत्तरोत्तर दूरी के आधार पर ग्रहों का क्रम निर्धारित किया गया, जैसे - शनि, गुरु, मंगल, सूर्य, शुक्र, बुद्ध और चन्द्रमा। इनमें चंद्रमा पृथ्वी के सबसे पास है तो शनि सबसे दूर। इसमें एक-एक ग्रह दिन के 24 घंटों अथवा होरा में एक-एक घंटे का अधिपति रहता है। इसलिए क्रम से सातों ग्रह एक-एक घंटे अधिपति, यह चक्र चलता रहता है और 24 घंटे पूरे होने पर अगले दिन के पहले घंटे का जो अधिपति ग्रह होगा, उसके नाम पर दिन का नाम रखा गया। सूर्य से सृष्टि होने की मान्यता के कारण प्रथम दिन रविवार मानकर ऊपर क्रम से शेष वारों का नाम रखा गया। पृथ्वी की परिक्रमा में चंद्रमा का 12 अंश चलना एक तिथि कहलाता है। अमावस्या को चंद्रमा, पृथ्वी तथा सूर्य के मध्य रहता है। इसे 0 (अंश) कहते हैं। यहां से 12 अंश चलकर जब चंद्रमा सूर्य से 180 अंश अंतर पर आता है, तो उसे पूर्णिमा कहते हैं। इस प्रकार एकम? से पूर्णिमा वाला पक्ष शुक्ल पक्ष कहलाता है तथा एकम? से अमावस्या वाला पक्ष कृष्ण पक्ष कहलाता है। कालगणना के लिए आकाशस्थ 27 नक्षत्र माने गए हैं- अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पूर्व फाल्गुन, उत्तर फाल्गुन, हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़, उत्तराषाढ़, श्रवणा, धनिष्ठा, शतभिषाक, पूर्व भाद्रपद, उत्तर भाद्रपद और रेवती। सताईस नक्षत्रों में प्रत्येक के चार पाद किए गए। इस प्रकार कुल 108 पाद हुए। इनमें से नौ पाद की आकृति के अनुसार बारह राशियों के नाम रखे गए- मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुंभ व मीन। पृथ्वी पर इन राशियों की रेखा निश्चित की गई, जिसे क्रांति कहते है। ये क्रांतियां विषुव वृत्त रेखा से 24 उत्तर में तथा 24 दक्षिण में मानी जाती हैं। इस प्रकार सूर्य अपने परिभ्रमण में जिस राशि चक्र में आता है, उस क्रांति के नाम पर सौर मास है। यह साधारणतन वृद्धि तथा क्षय से रहित है। मास भर सायंकाल से प्रातन काल तक जो नक्षत्र दिखाई दे तथा जिसमें चंद्रमा पूर्णता प्राप्त करे, उस नक्षत्र के नाम पर चांद्र मासों के नाम पड़े हैं- चित्रा, विशाखा, ज्येष्ठा, अषाढ़ा, श्रवण, भाद्रपद, अश्विनी, कृत्तिका, मृगशिरा, पुष्य, मघा, फाल्गुनी। इसलिए इसी आधार पर चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, अश्विनी, कृत्तिका, मार्गशीर्ष, पौष, माघ तथा फाल्गुन-ये चंद्र मासों के नाम पड़े। पृथ्वी के अपने कक्षा पर भ्रमण, झुकाव, सूर्य की किरणों के पृथ्वी पर पड़ने के आधार पर उत्तरायण- दक्षिणायन काल, कर्क- मकर संक्रांति आदि का निर्धारण किया गया है। पृथ्वी सूर्य के आस-पास लगभग एक लाख किलोमीटर प्रति घंटे की गति से 166000000 किलोमीटर लम्बे पथ का करीब 365 दिन में एक चक्र पूरा करती है। इस काल को ही वर्तमान में वर्ष माना गया। वर्ष की शुरुआत नववर्ष अर्थात वर्ष के प्रथम दिन से माना जाता है। और नए का आत्मबोध हमारे अंदर एक नवीन उत्साह भरता है, जीवन में नवीनपन लाने का प्रेरणा देता है और नए तरीक़े से जीवन जीने का संदेश देता है। इसलिए नववर्ष कोई भी हो, उसे खुलकर जीना चाहिए।

अलविदा-2024

हम 2024 बीत गया और पीछे मुड़ कर जायज़ा ले सकते हैं कि साल कैसा गुज़रा। शुरू से शुरू करते हैं। सन 2024 की शुरूआत रामजी के स्वागत के साथ हुई। अयोध्या में राम मंदिर का उद्घाटन काफी तडक़-भडक़ के साथ हुआ।

भावनाओं का ज्वार उफान पर था। हर घर भगवान के स्वागत के लिए आतुर था और हर तरफ जय श्रीराम' के उद्घोष सुनाई दे रहे थे।

भगवा रंग फैशन में था और यहां तक कि दिल्ली के खान मार्केट को राम मार्केट' तक कहा जाने लगा था।राजनीतिक पंडितों को पक्का भरोसा था कि नरेन्द्र मोदी की भाजपा जबरदस्त बहुमत के साथ सत्ता में वापिस आएगी।कहा जाता है कि जो नैरेटिव निर्धारित करता है, जीत उसी की होती है। नैरेटिव पर मोदीजी का कब्ज़ा था।जाहिर है जीत उन्हीं की होनी थी। यह भी कहा गया कि विचारधारात्मक कारणों' से आने वाला चुनाव महत्वपूर्ण होगा।

सर्दियाँ विदा हुईं और वसंत आया। चुनाव अब काफी नज़दीक थे। शुरू में माहौल में न तो रोमांच था और ना ही शोर-शराबा। बल्कि चुनावी परिदृश्य काफी उदास सा था।फिर, कांग्रेस छोडक़र भाजपा में जाने वाली के एक वक्तव्य ने देश का माहौल बदलकर रख दिया। पहले दौर का मतदान समाप्त होते-होते मूड में आया यह बदलाव भाजपा के स्टार प्रचारक मोदी की चाल-ढाल में दिखता होने लगा।अब की बार चार सौ पार' का नारा कहीं गुम हो गया। चुनावी भाषण काफी आक्रामक और निम्न स्तरीय हो गए। मंच से गालियाँ दी जानी लगीं। खतना, मुजरा आदि जैसे शब्द गूंजने लगे।चुनाव प्रचार के दौरान अपनी यात्राओं में मुझे मोदी के बारे में कम, और विपक्ष के बारे में ज्यादा सुनाई देने लगा। महाराष्ट्र में उद्धव ठाकरे एक सशक्त आवाज़ बन कर उभरे और उनके फेंस की संख्या बहुत बढ़ गई।

झारखंड में हेमंत सोरेन को जनता की हमदर्दी हासिल हुई। पश्चिम बंगाल में दीदी को जनता के दिल में अपनी जगह बनाए रखने के लिए एड़ी-चोटी का जोर लगाना पड़ा और शेष भारत में छोटी-सी लाल किताब (संविधान) लोकप्रिय हो गई।

मतदान के सातों दौरों में, सूरज आग बरसाता रहा और मतदाता खामोश रहे। यहां तक कि मोदी के वाराणसी में भी कोई जोश नजर नहीं आया।

चार जून को भारत के मतदाताओं ने हंकार और हेकड़ी को बुरी तरह से कुचला।उन्होंने अतीत के बारे में झूठी बातों, प्रोपेगेंडा, मुखौटों और उन खतरों को भांप लिया जो भारत के इंडिया और इंडिया के भारत के सामने उपस्थित थे। भारत की जनता ने मोदी और उनके साथियों का कद घटा दिया। और उनके गठबंधन को भी कमज़ोर कर दिया। जनता का विवेक जागृत हुआ और उसने विपक्ष को सशक्त बनाया। सबसे बड़ी बात यह कि उसने विपक्ष में भरोसा दर्शाया। और एक क्षण के लिए ऐसा लगा कि लोकतंत्र पुनर्स्थापित हो गया है।जबरदस्त गर्मी में मोदी के प्रति उन्माद कम ही महसूस किया गया। वे भी कम सक्रिय रहे और चुनावी गर्मी तथा मौसमी गर्मी से बचने लिए अधिक विदेश यात्राएं करने लगे।उन्होंने घरेलू राजनीति, घरेलू राजनीतिज्ञों के भरोसे छोड़ दी। विज्ञापनों और उद्घाटन-शिलान्यास के कार्यक्रमों में कमी आई। हरियाणा और जम्मू-कश्मीर के चुनावों में भी उनकी भागीदारी कम ही रही। लेकिन सात महीने और एक जोरदार मानसून के बाद चार राज्यों में चुनाव हुए और मोदी व उनके लोगों का कद और ताकत दुबारा बढ़ गए।खासतौर पर महाराष्ट्र में एक आश्चर्यजनक जबरदस्त जीत के बाद ऐसा लगता है कि मोदी ने अपना खोया हुआ आत्मविश्वास दुबारा हासिल कर लिया।इस बीच विपक्षी एकता में दरारें साफ नजर आने लगीं। उनकी एकता टूटने लगी और उस पर सवालिया निशान लग गए। इंडिया गठबंधन का भविष्य एक बार फिर कम सुनहरा लगने लगा।

टूट-फूट, ताने, अनुचित टिप्पणियां होने लगीं, अहं के टकराव होने लगे, नेतृत्व को लेकर खींच-तान होने लगी और राज्यों के चुनाव अलग-अलग लडऩे का सिलसिला जारी रहा।

जहां तक राहुल गांधी का सवाल है, लोकसभा चुनाव के बाद से एक समृद्ध विरासत के ये वारिस केवल संसद के सत्रों के दौरान अतिसक्रिय नजर आते हैं। बाकी समय वे वही दिखते हैं जिसके लिए वे मशहूर हैं - राजनीति के प्रति उदासीन।

यह भारतीय राजनीति के लिए दुर्भाग्यपूर्ण है कि राजनीति के मूलभूत तत्वों - संगठन, मतदाताओं को जोडऩे और उत्साहित करने - में राहुल गांधी सक्षम और कुशल नजर नहीं आ रहे हैं।

यह भी भारतीय राजनीति और विचारधारा के नैरेटिव की दृष्टि से दुर्भाग्यपूर्ण है कि राहुल गांधी सक्रिय राजनीति से दूर होकर नेतृत्व किसी और को, मसलन अपनी बहन प्रियंका गांधी को, सौंपने के लिए तैयार नहीं हैं।

इन सात महीनों के दौरान अडानी के बारे में सही बातें कहने के बावजूद वे लोकसभा चुनाव में हासिल बढ़त को इस्तेमाल कर अपनी स्थिति और मजबूत बनाने में विफल रहे।वे अपनी कमजोर होती और बिखरती पार्टी को पुनर्जीवित करने और उसे सुधारने में भी विफल रहे।बल्कि जिस विचारधारा को अपनाया है, उसके चलते पार्टी काफी हद तक वामपंथ की ओर खिसक गई है - वह पार्टी जो पिछली पीढिय़ों में उच्च-जातियों की एक मध्यमार्गी पार्टी मानी जाती थी।अब साल खत्म होने को है। ठिठुरन भरी सर्दी और धुंध का दौर दुबारा आ गया है। उसके साथ ही पिछले साल की अनिश्चितता की स्थिति भी दुबारा बन गई है।यह साल हमारे देश में लोकतंत्र के लिए अच्छा रहा। क्या नए साल में लोकतंत्र दुबारा लडखड़ाने लगेगा? क्या नरेन्द्र मोदी दुबारा वह सब हासिल कर लेंगे जो 2024 में उनसे छिन गया था?

या फिर राहुल गांधी को जनता के रूख और उनकी जरूरतों का अहसास होगा और वे एक फुलटाइम राजनीतिज्ञ की तरह व्यवहार करना शुरू करेंगे?

पहली स्थिति बनने की संभावना अधिक नजर आती है।

हम देश में एक पूर्णतन नया माहौल बनते देखेंगे? क्या मतदाता अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करेंगे? क्या युवा, जिन्होंने मोदी के राज में सिर्फ बेरोजगारी भुगती है, हवा का रूख बदलेंगे?

भारत में क्या बांग्लादेश जैसा कुछ होगा? या युवा भारत बटोगे तो कटोगे के नैरेटिव में खोया रहेगा। यह वह समय है जब हमें आने वाले वक्त के बारे में सोचना होगा, सोचना चाहिए।

जले हुए बर्तन को साफ करने में छूट रहे हैं पसीने

फैमिली बड़ी हो या छोटी रोजाना खाना बनाते वक्त कुछ ना कुछ बर्तन जल ही जाते हैं, जिससे रसोई में काम करने वाली अधिकतर महिलाएं काफी परेशान रहती है. क्योंकि जले हुए बर्तनों को साफ करना एक कठिन काम हो सकता है. अगर आप भी इससे परेशान हैं, तो अब आपको परेशान होने की जरूरत नहीं है, क्योंकि आज हम आपको कुछ ऐसे टिप्स बताएंगे, जिनकी मदद से आप जले हुए बर्तन को आसानी से कुछ मिनट में साफ कर सकती हैं.

जले हुए बर्तन को आसानी से करें साफ

रसोई में खाना बनाते समय कभी-कभी बर्तन जल जाते हैं, जिससे उन्हें साफ करना मुश्किल हो जाता है. ऐसे में आप जले हुए बर्तन को साफ करने के लिए बेकिंग सोडा और पानी का इस्तेमाल कर सकती हैं. इसके लिए आपको जले हुए बर्तन को पहले पानी से भरकर रख देना होगा और फिर इसमें एक कप बेकिंग सोडा डाल दें. अब इस मिश्रण को कुछ घंटे के लिए साइड में रख दें, अब एक कडक़ ब्रश की मदद से जले हुए हिस्से को रगडऩे से आप बड़ी आसानी से जले हुए बर्तन को साफ कर सकती हैं.

सिरके का करें इस्तेमाल

इसके अलावा आप सिरके का इस्तेमाल कर सकते हैं. सबसे पहले आपको जले हुए बर्तन में बराबर मात्रा में सिरका और पानी डालना होगा अब कुछ देर के लिए आप इसे गैस पर मध्यम आंच पर उबलने के लिए रख दें. जब यह ठंडा हो जाएं, तब आप इस बर्तन को रगड़ कर अच्छी तरह धो लें. इससे आपका बर्तन आसानी से साफ हो जाएगा.

टमाटर का पेस्ट

यही नहीं आप टमाटर के पेस्ट का भी इस्तेमाल कर सकते हैं. इसके लिए आपको टमाटर के पेस्ट को जले हुए हिस्से पर लगाना होगा, थोड़ी देर तक इसे लगा रहने दे उसके बाद साफ पानी से धो लें. ऐसा करने पर जला हुआ बर्तन साफ हो जाएगा.

सोडे का इस्तेमाल

इसके अलावा आप सोडे का इस्तेमाल कर सकते हैं. सोडा को पानी में मिलाकर पेस्ट बना ले, फिर ऐसे जले हुए हिस्से पर लगाएं. कुछ देर बाद बर्तन धो दें. अब आप नींबू को आधा काट लें और उसमें नमक लगाकर जले हुए हिस्से पर रगड़ें. कुछ देर बाद आप इसे धो लें.

इन चीजों का रखें ध्यान

इसके अलावा कुछ चीजों का ध्यान रखना चाहिए, जैसे जले हुए बर्तन को तुरंत ना धोएं. इसके अलावा ज्यादा कठोर ब्रश का इस्तेमाल न करें. इससे बर्तन खराब हो सकते हैं. इन सभी टिप्स को अपनाकर आप आसानी से जले हुए बर्तन को धो सकते हैं.

डेंटल प्रॉब्लम से परेशान हैं?

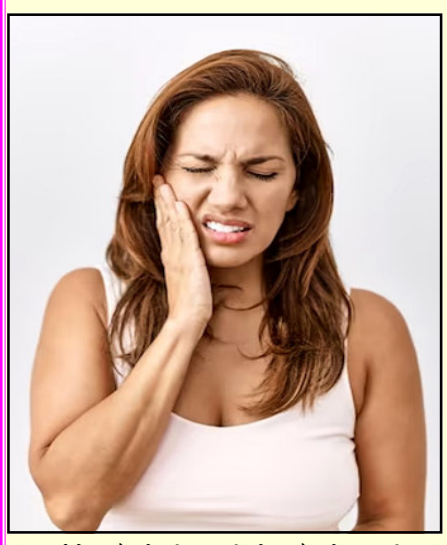

दांतों से जुड़ी समस्याएं कई लोगों के लिए एक आम परेशानी है. लेकिन कई बार यह गंभीर बीमारी के शुरुआती संकेत हो सकते हैं. मुंह, होंठ, जीभ और गले को प्रभावित करने वाले ओरल कैंसर को अक्सर कम गंभीर दांतों की समस्या समझ लिया जाता है. शुरुआती पहचान बहुत ज़रूरी है, इसलिए चेतावनी के संकेतों के बारे में पता होना काफ़ी फ़ायदेमंद हो सकता है. यहाँ ओरल कैंसर के पांच चेतावनी संकेत दिए गए हैं जिन्हें आपको नजऱअंदाज़ नहीं करना चाहिए.

1. लगातार मुंह के छाले

कभी-कभार मुंह में छाले होना सामान्य बात है, खासकर तब जब आप गलती से अपना गाल काट लें या कुछ ऐसा खा लें जिससे आपके मुंह में जलन हो. हालांकि, अगर घाव दो सप्ताह से ज़्यादा समय तक बना रहे और ठीक न हो, तो यह मुंह के कैंसर का संकेत हो सकता है. उन घावों पर ध्यान दें जिनसे आसानी से खून बहता हो या असामान्य रूप से दर्द होता हो.

2. गांठ या मोटे पैच

अगर आपको अपने मुंह, जीभ या गले में गांठ या ऊतक का मोटा पैच दिखाई देता है जो ठीक नहीं होता है, तो इसकी जांच करवाना ज़रूरी है. ये सौम्य हो सकते हैं, लेकिन ये घातक ट्यूमर की उपस्थिति का संकेत भी दे सकते हैं.

3. बिना किसी कारण के ब्लीडिंग

जबकि मसूड़ों से कभी-कभार होने वाला ब्लीडिंग बहुत ज़ोर से ब्रश करने या मसूड़े की सूजन के कारण हो सकता है, लेकिन मुंह से बिना किसी कारण के ब्लीडिंग को कभी भी नजऱअंदाज़ नहीं करना चाहिए. यह मुंह के कैंसर जैसी किसी गंभीर बीमारी का संकेत हो सकता है, खासकर अगर यह बार-बार और बिना किसी स्पष्ट कारण के होता है.

4. निगलने में कठिनाई या गले में लगातार खराश

अगर आपको निगलने में कठिनाई होती है, गले में लगातार खराश रहती है या ऐसा लगता है कि आपके गले में लंबे समय से कुछ फंसा हुआ है, तो यह सिर्फ़ सामान्य सर्दी-जुकाम से ज़्यादा हो सकता है. ये लक्षण गले या अन्नप्रणाली में कैंसर का संकेत दे सकते हैं और स्वास्थ्य सेवा पेशेवर द्वारा इसकी जांच की जानी चाहिए.

5. आवाज़ में बदलाव

दो हफ़्ते से ज़्यादा समय तक आवाज़ में कर्कशता या आवाज़ में बदलाव का मूल्यांकन डॉक्टर द्वारा किया जाना चाहिए. ये लक्षण मुंह या गले के कैंसर से जुड़े हो सकते हैं, खासकर अगर इसके साथ लगातार खांसी या गले में गांठ जैसा महसूस हो.

ऐसी दिक्कतों से जूझ रहे हैं तो इन बातों का जरूर रखें ख्याल

अगर आपको इनमें से कोई भी लक्षण महसूस होता है, तो जल्द से जल्द किसी स्वास्थ्य सेवा प्रदाता या दंत चिकित्सक से परामर्श करना ज़रूरी है. मुंह के कैंसर का जल्दी पता लगाने और उसका इलाज करने से सफल परिणामों की संभावना काफी बढ़ जाती है। समग्र मौखिक स्वास्थ्य को बनाए रखने और संभावित समस्याओं को जल्दी पकडऩे के लिए नियमित रूप से दांतों की जाँच भी ज़रूरी है. अपने स्वास्थ्य के बारे में सक्रिय रहना और इन चेतावनी संकेतों पर ध्यान देना आपकी जान बचा सकता है. यदि कुछ भी असामान्य लगे तो चिकित्सीय सलाह लेने में संकोच न करें, पछताने से बेहतर है कि पहले से ही सुरक्षित रहें.

लोग कच्चे लहसुन को मानते हैं हर बीमारी का इलाज

कच्चे लहसुन के सेवन के फायदों को लेकर कई मिथक प्रचलित हैं। लोग मानते हैं कि कच्चा लहसुन हर बीमारी का इलाज है और इसे खाने से सभी समस्याएं दूर हो जाती हैं।हालांकि, क्या यह सच में इतना प्रभावी है? आइए इस लेख में इस मिथक के पीछे की सच्चाई को समझते हैं और जानते हैं कि क्या वाकई में कच्चा लहसुन हर बीमारी का इलाज हो सकता है या नहीं।

कच्चे लहसुन के स्वास्थ्य लाभ

लहसुन में एंटीऑक्सीडेंट और एंटीबैक्टीरियल गुण होते हैं, जो शरीर को संक्रमण से बचाने में मदद करते हैं।यह सच है कि रोजाना की डाइट में लहसुन शामिल करने से प्रतिरक्षा मजबूत होती है और छोटी-मोटी बीमारियों से बचाव होता है।इसके अलावा, लहसुन का सेवन सर्दी-खांसी जैसी समस्याओं को भी कम करता है। हालांकि, केवल कच्चा लहसुन खाने से सभी बीमारियां ठीक हो जाएंगी, यह सोचना गलत होगा।इसके लिए संतुलित डाइट और स्वस्थ जीवनशैली भी जरूरी है।

हृदय स्वास्थ्य के लिए है लाभदायक

लहसुन का सेवन हृदय स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद माना जाता है। इसमें मौजूद एलिसिन नामक तत्व रक्तचाप को नियंत्रित करने और कोलेस्ट्रॉल स्तर को कम करने में मदद करता है।यह तत्व रक्त वाहिकाओं को भी स्वस्थ रखता है, जिससे हृदय रोगों का खतरा कम होता है। हालांकि, दिल को दुरुस्त रखने के लिए केवल कच्चा लहसुन ही पर्याप्त नहीं होता।इसके लिए संतुलित डाइट और एक्सरसाइज भी जरूरी होती है, ताकि बीमारियों से बचाव हो सके।

पाचन तंत्र भी होता है मजबूत

लोग मानते हैं कि कच्चा लहसुन पाचन तंत्र के लिए बहुत अच्छा होता है। इसमें मौजूद तत्व गैस और अपच आदि जैसी पेट की समस्याओं को कम कर सकते हैं।इसके अलावा, यह पाचन को बेहतर बनाने में भी मदद करता है। हालांकि, ध्यान रखने योग्य बात यह है कि अधिक मात्रा में कच्चा लहसुन खाने से पेट में जलन या अन्य समस्याएं भी हो सकती हैं।इसलिए, इसे संतुलित मात्रा में ही खाना चाहिए।

क्या कच्चा लहसुन खाने से हो सकता है कैंसर का उपचार?

कुछ शोध बताते हैं कि लहसुन का सेवन कैंसर कोशिकाओं की वृद्धि को धीमा कर सकता है। हालांकि, इसके जरिए कैंसर का इलाज नहीं किया जा सकता है।वैज्ञानिक अभी भी इस पर शोध कर रहे हैं और अब तक कोई ठोस प्रमाण नहीं मिला है, जो साबित करे कि केवल कच्चा लहसुन खाने से कैंसर का उपचार हो सकता है।इसलिए, इसे एकमात्र उपाय मानना सही नहीं होगा और अन्य चिकित्सीय सलाह भी जरूरी है।

अधिक मात्रा में न करें लहसुन का सेवन

लोगों को लगता है कि वे जितना ज्यादा कच्चा लहसुन खाएंगे, उन्हें उतना ही फायदा होगा। हालांकि, यह धारणा गलत हो सकती है।अधिक मात्रा में इसका सेवन नुकसानदायक हो सकता है, जिससे पेट दर्द और उल्टी जैसी समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं।इसलिए, हमेशा संतुलित मात्रा में ही कच्चे लहसुन का सेवन करें। कच्चे लहसन के कुछ फायदे जरूर होते हैं, लेकिन इसे हर बीमारी का इलाज मान लेना सही नहीं होगा।

निकाय चुनाव: आम आदमी पार्टी की प्रत्याशियों की दूसरी सूची जारी

देहरादून । आम आदमी पार्टी ने आज उत्तराखण्ड नगर निकाय चुनावों को लेकर प्रदेश के हरिद्वार, पौड़ी, नैनीताल और उधमसिंहनगर सहित विभिन्न जनपदों के अंतर्गत नगर पालिका परिषद और नगर पंचायत सहित अनेको पार्षद,सभासद और वार्ड मेम्बरों के नामो सहित कुल 21 लोगो की विधिवत रूप से घोषणा कर दी हैं। इस अवसर पर बोलते हुए प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि आम आदमी पार्टी उत्तराखण्ड के अधिकृत प्रत्याशी पूर्व में घोषित 15 गारंटियों को लेकर जनता के बीच जाकर अपने पक्ष में वोट की अपील करेंगे। आगामी निकाय चुनावों में उत्तराखण्ड की देवतुल्य जनता नए विकल्प के तौर पर आम आदमी पार्टी के समर्पित प्रत्याशी को निश्चित तौर पर विजयी कर एक नए राजनैतिक युग का उदघोष करेगी। आम आदमी पार्टी शीघ्र ही बाकी बचे हुए क्षेत्रो के लिए प्रत्याशियों की अगली सूची अतिशीघ्र जारी करेगी।

बॉक्स ऑफिस पर पुष्पा 2 का शानदार प्रदर्शन जारी, 1100 करोड़ क्लब के करीब

अल्लू अर्जुन-रश्मिका मंदाना की नई एक्शन फिल्म पुष्पा 2 द रूल को सिनेमाघरों में रिलीज हुए 1 हफ्ता हो चुका है. इन 8 दिनों में पुष्पा 2 ने घरेलू से लेकर दुनियाभर के बॉक्स ऑफिस पर कई रिकॉर्ड तोड़े और बनाए. इसने कमाई के मामले में कल्कि 2898 एडी, स्त्री 2, जवान, पठान जैसी ब्लॉकबस्टर फिल्मों को पीछे छोड़ दिया है. वहीं, हिंदी बॉक्स ऑफिस पर भी सुकुमार की निर्देशित फिल्म ने नया इतिहास रचा है. अब इसकी नजर ऑस्कर विनिंग फिल्म आरआरआर पर हैं. एसएस राजामौली की डायरेक्ट की गई इस फिल्म को पछाडने के लिए कुछ दूरी है. संभवतः पुष्पा 2 रिलीज के 9वें यह कारामात कर सकती हैं.

सैकनिल्क के शुरुआती अनुमानों के अनुसार, पुष्पा 2 ने अब तक भारत में सभी भाषाओं में 726.26 करोड़ रुपये की कमाई की है. मेकर्स के अनुसार, दुनिया भर में फिल्म ने अब तक **1067** करोड़ रुपये की कमाई की है. फिल्म ने 164.25 करोड़ रुपये की शानदार कमाई की. शुरुआती वीकेंड में फिल्म ने कई रिकॉर्ड तोड़ते हुए 529 करोड़ रुपये की कमाई की. हालांकि, सप्ताह के दिनों में कलेक्शन में गिरावट शुरू हो गई, इसके बावजूद भी इसने बॉक्स ऑफिस पर रिकॉर्ड तोडना जारी रखा. इसने सभी भाषाओं में पहले मंडे टेस्ट में 64.45 करोड़ रुपये, मंगलवार को 51.55 करोड़ रुपये और बुधवार को 43.35 करोड़ रुपये की कमाई की. सैकनिल्क के मुताबिक, दूसरे गुरुवार यानी रिलीज के 8वें दिन पुष्पा 2 ने घरेलू स्तर पर 37.9 करोड़ रुपये कमाए. इसी के साथ इस एक्शन थ्रिलर ने अपने पहले सप्ताह का समापन शानदार तरीके से किया और 8वें दिन भी अपनी ब्लॉकबस्टर सफलता का सिलसिला बरकरार रखा.

पुष्पा 2: द रूल ने भारतीय बॉक्स ऑफिस पर सभी भाषाओं में 726.26 करोड़ रुपये की शानदार कमाई की है, जिससे यह अब तक की चौथी सबसे अधिक कमाई करने वाली भारतीय फिल्म बन गई है. फिल्म अब आरआरआर के 772 करोड़ रुपये के लाइफटाइम कलेक्शन को पार कर टॉप 3 में अपना नाम दर्ज करने की राह पर है.

7 दिनों में पुष्पा 2 का हिंदी कलेक्शन में 400 करोड़ का आंकड़ा पार में सफल रही है. मेकर्स के मुताबिक, पुष्पा 2 ने हिंदी में 406.5 करोड़ नेट का आंकड़ा पार किया है. हिंदी में पहले सप्ताह में सबसे अधिक नेट कलेक्शन करके नया रिकॉर्ड बनाया . इसने 406.5 करोड़ रुपये के साथ यह हिंदी में पहले हफ्ते में सबसे ज्यादा नेट कलेक्शन करने वाली फिल्म बन गई है. 8वें दिन सुकुमार की इस फिल्म ने 27.5 करोड़ रुपये कमाए हैं, जिससे भारतीय बॉक्स ऑफिस पर इसकी कुल कमाई 434 करोड़ रुपये हो गई है. संभवतः दूसरे वीकेंड तक हिंदी भाषा में **500** करोड़ रुपये का आंकड़ा पार कर जाएगी. अगर यह अनुमान सही साबित हुआ तो पुष्पा 2 भारत में हिंदी में सबसे अधिक कमाई करने वाली भारतीय फिल्म बनने की राह पर होगी.

पुष्पा 2: द रूल पिछले गुरुवार 5 दिसंबर को सिनेमाघरों में रिलीज हुई, और यह अभी भी बॉक्स ऑफिस पर रिकॉर्ड तोड़ कमाई कर रही हैं. इसने इन 8 दिनों में नए रिकॉर्ड तोड़े और बनाए हैं. पुष्पा 2 **2024** की सबसे ज्यादा कमाई करने वाली भारतीय फिल्म बन गई है. इसने रिलीज के सात दिनों के अंदर ही 1000 करोड़ रुपये से अधिक का कलेक्शन किया. मेकर्स के मुताबिक, पुष्पा 2 ने अपने पहले 7 सप्ताह में 1067 करोड़ की कमाई की, जो भारतीय सिनेमा में पहले सप्ताह की अब तक की सबसे अधिक कमाई है.

फिल्म इंडस्ट्री ट्रैकर मनोबाला विजनबालन ने पुष्पा 2 के लेटेस्ट वर्ल्डवाइड कलेक्शन के बारे में अपडेट साझा किया है. मनोबाला विजनबालन ने एक्स (पूर्व में ट्विटर) पर पुष्पा 2 का वर्ल्डवाइड कलेक्शन शेयर किया है. उन्होंने लिखा है, पुष्पा 2 वैश्विक स्तर पर 1500 करोड़ रुपये के आंकड़े की ओर बढ़ रही है. पुष्पा 2 सप्ताह के दिनों में बहुत अच्छा परफॉर्म कर रही है. पुष्पा 2 ने 8 दिनों में 1086 करोड़ रुपये कमा लिए हैं. प्रभास की कल्कि 2898 एडी के लाइफटाइम कलेक्शन (**1,042**.25 करोड़ रुपये) को पार करने के बाद, पुष्पा 2 सभी भाषाओं में बाहुबली 2: द कन्क्लूजन (1788**.06** करोड़ रुपये वर्ल्डवाइड), केजीएफ: चैप्टर 2 (1215 करोड़ रुपये वर्ल्डवाइड), आरआरआर (1230 करोड़ रुपये वर्ल्डवाइड), जवान (1160 करोड़ रुपये वर्ल्डवाइड), और दंगल (**2070.3** करोड़ रुपये) को मात देने की तैयारी में है.

रानी मुखर्जी की फिल्म मर्दानी की तीसरी किस्त का ऐलान, रिलीज डेट से भी उठा पर्दा

रानी मुखर्जी की मर्दानी को दर्शकों ने खूब पसंद किया था इसकी दूसरी किस्त ने भी क्रिटीक्स और दर्शकों की खूब सरहना बटोरी थी. तभी से इसके तीसरे पार्ट का सभी बेसब्री से इंतजार कर रहे थे. अब वह इंतजार खत्म हुआ क्योंकि यशराज स्टूडियो ने मर्दानी 3 का ऑफिशियल अनाउंसमेंट कर दिया है. बता दें मर्दानी 2 को रिलीज हुए 5 साल हो गए हैं इसी मौके पर मेकर्स ने मर्दानी 3 की रिलीज डेट का अनाउंसमेंट करते हुए दर्शकों को सरप्राइज दिया है. वहीं **2024** में मर्दानी की रिलीज को **10** पूरे हो गए हैं. इस फ्रेंचाइजी की शुरुआत **201**4 में हुई थी. 22 अगस्त **201**4 को मर्दानी सिनेमाघरों में रिलीज हुई थी और इसे पॉजीटिव रिस्पॉन्स मिला था.

यशराज स्टूडियोज ने फिल्म का नया पोस्टर रिलीज करते हुए रिलीज डेट का एलान किया. पोस्टर के साथ कैप्शन लिखा, इंतजार खत्म हुआ, मर्दानी 3 में शिवानी शिवाजी रॉय के रूप में रानी मुखर्जी फिर से लौट रही हैं. फिल्म 2026 में सिनेमाघरों में रिलीज होगी. हालांकि यह किस तारीख को रिलीज होगी इसका खुलासा अभी नहीं किया गया है. मर्दानी 3 को अभिराज मीनावाला डायरेक्ट और आदित्य चोपड़ा प्रोड्यूस कर रहे हैं. फिल्म में रानी मुखर्जी लीड रोल में हैं वहीं बाकी की स्टारकास्ट का अभी खुलासा नहीं किया गया है.

रानी मुखर्जी की दोनों फिल्मों की कहानी बेहतरीन थी इसके डायरेक्शन से लेकर, रानी मुखर्जी की परफॉर्मेंस और इसके स्टोरी आइडिया तक सबकुछ सराहनीय था. अब फिल्म में आखिर नया क्या है. इस पर रानी ने बात करते हुए कहा, फिल्म डार्क और ब्रूटल होग. हम दर्शकों की उम्मीदों पर खरा उतरने की पूरी कोशिश करेंगे. मर्दानी 3 डार्क, घातक और क्रूर है. इसलिए, मैं हमारी फिल्म के लिए लोगों का रिस्पॉन्स देखने के लिए बेताब हूं. मुझे उम्मीद है कि वे इस फिल्म को भी उतनी ही सराहना देंगे जितना पहले की दोनों फिल्मों को मिला है.

वरुण धवन की भेडिया के सीक्वल में नजर आएंगी श्रद्धा कपूर

अभिनेत्री श्रद्धा कपूर को पिछली बार फिल्म स्त्री 2 में देखा गया था, जिसमें उनकी अदाकारी की खूब तारीफ हुई और बॉक्स ऑफिस पर भी इसने बेहतरीन प्रदर्शन किया। यह साल 2024 की सबसे अधिक कमाई करने वाली फिल्मों में से एक है।अब श्रद्धा ने अपनी आगामी परियोजनाओं पर खुलकर बात की है।इसके साथ उन्होंने बताया कि क्या वह वरुण धवन की फिल्म भेडिया के सीक्वल भेडिया 2 में नजर आएंगी या नहीं। श्रद्धा ने कहा, यह केवल समय ही बताएगा कि क्या मैडॉक की किसी अन्य फिल्म में मैरा कोई कैमियो आता है या नहीं। मुझे अभी तक पता नहीं है, लेकिन बहुत जल्द मैं उन फिल्मों के बारे में बताऊंगी, जो मैं करने वाली हैं। इन फिल्मों की शूटिंग मैं अगले साल करूंगी।बता दें कि श्रद्धा साल 2022 में आई फिल्म भेडिया के खास गाने ठुमकेश्वरी में नजर आई थीं।

मोचा कॉफी का लुत्फ उठाती हुई शनाया कपूर ने कहा, मुझे मुस्कान मिली

फिल्म इंडस्ट्री में डेब्यू को तैयार शनाया कपूर ने सोशल मीडिया पर अपनी खूबसूरत तस्वीरें शेयर कीं, जिसमें वह मोचा कॉफी का लुत्फ उठाती नजर आईं।

अपने ऑफिशियल इंस्टाग्राम पर तस्वीरें शेयर कर शनाया कपूर ने कैप्शन में लिखा, मोचा तुमने मुझे मुस्कुराहट दी। तस्वीरों में अभिनेत्री की हाथ में कॉफी का मग दिखाई दे रहा है, जिसमें मोचा कॉफी है और वह उसे खुशी से पीती नजर आ रही हैं। सेल्फी के साथ ही उन्होंने अपने बरामदे और कॉफी मग की भी तस्वीर दिखाई। तस्वीरों में अभिनेत्री एकदम फ्रेश नजर आईं।

बॉलीवुड में अपनी पहली फिल्म के साथ धमाल मचाने को तैयार अभिनेत्री शनाया इस साल 25 साल की हो गई हैं। अपने जन्मदिन की तस्वीरें शेयर कर उन्होंने प्रशंसकों को बर्थडे पार्टी की झलक दिखाई थी। शनाया ने अपना 25वां बर्थडे संयुक्त अरब अमीरात में मनाया था। शनाया कपूर 'शक्ति' फेम संजय कपूर और महीप कपूर की बेटी हैं।

इस बीच शनाया के वर्कफ्रंट की बात करें तो अभिनेत्री शशांक खेतान निर्देशित फिल्म 'बेधडक' से डेब्यू करने जा रही हैं। यह करण जौहर की होम प्रोडक्शन फिल्म है। इसके अलावा अभिनेत्री की झोली में और भी कई बड़े प्रोजेक्ट्स हैं। शनाया कपूर साउथ सुपरस्टार मोहनलाल के साथ 'वृषभ' में भी नजर आएंगी।

पैन-इंडिया फिल्म में अभिनेत्री एक राजकुमारी की भूमिका निभाती नजर आएंगी। फिल्म का निर्देशन नंदा किशोर कर रहे हैं। फिल्म में काम करने को लेकर शनाया ने कई बार अपना उत्साह जाहिर किया।

श्रद्धांजलि! दमतोड़ती अर्थव्यवस्था के खेवनहार बने थे डॉ मनमोहन सिंह

डॉ श्रीगोपाल नारसन एडवोकेट

पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह का पार्थिव शरीर एम्स से उनके आवास पर पहुंच गया है। पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह का 92 वर्ष की आयु में निधन हो गया। भारत सरकार ने 27 दिसंबर, 2024 के लिए निर्धारित सभी कार्यक्रम रद्द कर दिए हैं और 7 दिनों का राष्ट्रीय शोक घोषित किया है।डॉ. मनमोहन सिंह का अंतिम संस्कार पूरे राजकीय सम्मान के साथ किया जाएगा।26 दिसंबर 2024 को घर पर ही उन्हें अचानक बेहोशी आ गई। घर पर तुरन्त उन्हें बचाने के उपाय शुरू किए गए। उन्हें रात 8ः06 बजे नई दिल्ली के एम्स के मेडिकल इमरजेंसी में लाया गया। तमाम कोशिशों के बावजूद उन्हें बचाया नहीं जा सका और रात 9ः51 बजे उन्हें मृत घोषित कर दिया गया। पूर्व प्रधानमंत्री के निधन पर राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति और प्रधानमंत्री से लेकर देश के कई बड़े नेताओं और हस्तियों ने दुख व्यक्त किया है।मनमोहन सिंह का जन्म 1932 में पंजाब में हुआ था। वह 2004 से 2014 तक लगातार दो बार भारत के प्रधानमंत्री रहे। उन्होंने 2004 में अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व वाले एनडीए के खिलाफ 2004 के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस की जीत के बाद पहली बार पीएम पद की शपथ ली थी। उन्होंने 2009 से 2014 तक अपना दूसरा कार्यकाल पूरा किया। उसके बाद 2014 में पीएम नरेंद्र मोदी ने उनकी जगह ली। 33 साल तक सेवा देने के बाद वे इस साल की शुरुआत में राज्यसभा से सेवानिवृत्त हो गए थे।मनमोहन सिंह के कार्यकाल में वैश्विक मंदी के बावजूद भारत तत्कालीन प्रधानमंत्री डॉ मनमोहन सिंह की सूझबूझ के चलते आर्थिक रूप में मजबूत बना रहा।मनमोहन सिंह को सन 1991 में भारत की अर्थव्यवस्था को बचाने के लिए जाना जाता है। मनमोहन सिंह का नाम शीर्ष अर्थशास्त्रियों की फेहरिस्त में सम्मान से लिया जाता रहा है। अगर डॉ मनमोहन सिंह नहीं होते तो वर्ष1991-92 में भारत आर्थिक रूप से अपंग हो गया होता।डॉ मनमोहन सिंह ने तत्कालीन प्रधानमंत्री नरसिम्हा राव के साथ मिलकर भारत की आर्थिक दिशा ही बदल दी थी।डॉ. मनमोहन सिंह ने ऐसी नीतियां पेश कीं, जो न केवल उस समय के आर्थिक संकट से उबरने में मददगार रहीं, बल्कि भारत को उच्च विकास पथ पर भी ले गईं।

हालांकि उसके बाद देश की बदहाल अर्थव्यवस्था ने प्रत्येक देशवासी के मन में अनिश्चितता का माहौल व डर पैदा कर दिया है। हर कोई अपने भविष्य को लेकर चिंतित है।सन 2020-21 में भारतीय अर्थव्यवस्था में भारी गिरावट देखने को मिली। यह चार दशक में पहली बार हुआ जब कोरोनावायरस महामारी की रोकथाम के लिये जारी 'लॉकडाउन% की वजह से खपत कम होने और कारोबारी गतिविधियां थमने से चुनौतियों का सामना कर रही घरेलू अर्थव्यवस्था में गिरावट आई थी।हालांकि कोरोनावायरस संकट से पहले भी भारत की अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर धीमी पड़ गयी थी और यह छह वर्ष की सबसे निचली दर पर पहुंच गयी थी।सरकार द्वारा आर्थिक प्रोत्साहन पैकेज में उठाए गए कदम उम्मीदों के अनुरूप नहीं होने, अर्थव्यवस्था की समस्याएं इससे बहुत ज्यादा व्यापक होने के कारण वित्त वर्ष 2020-21 में भारतीय अर्थव्यवस्था की सकल

घरेलू उत्पाद (जीडीपी) वृद्धि दर में वास्तविक गिरावट आई थी।भारत में कोविड-19 के प्रकोप और लॉकडाउन ने अर्थव्यवस्था में रुकावट पैदा कर दी थी। इससे वित्त वर्ष में वृद्धि तेजी से संकुचित हुई औरआर्थिक गतिविधियां अगले एक साल तक प्रभावित रही। सबसे अधिक रोजगार देने वाला औद्योगिक सेवा क्षेत्र गंभीर रूप से प्रभावित रहा है। उद्योग जगत के दिग्गज और आर्थिक मामलों के विशेषज्ञों द्वारा बार-बार चेताने के बावजूद भी सरकार गहरी नींद में सो रही है।पहले नोटबंदी,फिर जीएसटी और फिर कोरोना संकट ने व्यापार जगत में भारी तबाही मचाई । इससे छोटे और घरेलू उद्योग तो बंद हो ही गए , वही देश का ऑटो मोबाइल सेक्टर भी दम तोड़ने लगा था। देश का विदेशी मुद्रा भंडार 26 जुलाई, 2019 को 72.7 करोड़ डालर से घटकर 429.65 अरब डॉलर पर आ गया था।जो लॉक डाउन के बाद तो सबसे निचले पायदान पर पहुंच गया था। रुपये के लगातार कमजोर होने के कारण भारत की अर्थव्यवस्था फिसलकर कॉफी नीचे आ गई थी।ऐसी हालत कभी आजादी के बाद मिले भारत की थी।फिर भी प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरु के प्रयास से वर्ष 1964 में भी भारत अर्थ व्यवस्था में सातवें स्थान पर आ गया था। वही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश को 2024-25 तक 5 हजार अरब डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने का बड़ा वादा किया था, लेकिन वर्तमान बदहाल आर्थिक संकेत इस बात के सूचक हैं कि उनका यह दावा शायद ही सच पाए।अपने पहले कार्यकाल में मोदी सरकार ने 2 करोड़ नौकरियां देने, किसानों की आय दोगुनी करने, मंहगाई कम करने और भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने के वादे किए थे।2014 से 2019 तक स्वच्छ भारत, बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ, स्टार्टअप और स्टैंडअप इंडिया जैसे प्रोग्राम दिए थे जो अपने लक्ष्यों को प्राप्त नही कर सके और नाकाम रहे।भारत सहित दुनिया के कई देशों में भी आर्थिक गतिविधियों में मंदी के स्पष्ट संकेत दिख रहे हैं। अर्थव्यवस्था के मंदी की तरफ बढ़ने पर आर्थिक गतिविधियों में चौतरफा गिरावट आई है। ऐसे कई दूसरे पैमाने भी हैं, जो अर्थव्यवस्था के मंदी की तरफ बढ़ने का संकेत दे रहे हैं।

इससे पहले आर्थिक मंदी ने साल 2007-2009 में पूरी दुनिया में तांडव मचाया था। यह साल सन 1930 की मंदी के बाद सबसे बड़ा आर्थिक संकट था। लेकिन तत्कालीन प्रधानमंत्री डॉ मनमोहन सिंह ने प्रसिद्ध अर्थशास्त्री होने के नाते देश को आर्थिक संकट से बचा लिया था।लेकिन आर्थिक विकास दर का लगातार गिरना अच्छा नही कहा जा सकता।यदि किसी अर्थव्यवस्था की विकास दर या जीडीपी तिमाही-दर-तिमाही लगातार घट रही है, तो इसे आर्थिक मंदी का बड़ा संकेत माना जाता है। किसी देश की अर्थव्यवस्था या किसी खास क्षेत्र के उत्पादन में बढ़ोतरी की दर को विकास दर कहा जाता है। यदि देश की विकास दर पर चर्चा की जा रही हो, तो इसका मतलब देश की अर्थव्यवस्था या सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) संकट में है।जीडीपी एक निर्धारित अवधि में किसी देश में बने सभी उत्पादों और सेवाओं के मूल्य का जोड़ है।आज तो हालत यह है कि आम लोगों के पास पेट भरने तक के लाले पड़ गए है।ऐसे में कपड़ा,मकान और वाहन के बारे में सोचना भी संभव नही रह गया है।

अर्थव्यवस्था में यदि उद्योग का पहिया रुकेगा तो नए उत्पाद नहीं बनेंगे। इसमें निजी सेक्टर की बड़ी भूमिका होती है। मंदी के दौर में उद्योगों का उत्पादन कम हो जाता। मिलों और फैक्ट्रियों पर ताले लग जाते हैं, क्योंकि बाजार में बिक्री घट जाती है।

यदि बाजार में औद्योगिक उत्पादन कम होता है तो कई सेवाएं भी प्रभावित होती है। इसमें माल ढुलाई, बीमा, गोदाम, वितरण जैसी तमाम सेवाएं शामिल हैं।कई कारोबार जैसे टेलिकॉम, टूरिज्म सिर्फ सेवा आधारित हैं, मगर व्यापक रूप से बिक्री घटने पर उनका बिजनेस भी प्रभावित होता है।

अर्थव्यवस्था में मंदी आने पर रोजगार के अवसर घट जाते हैं। उत्पादन न होने की वजह से उद्योग बंद हो जाते हैं, ढुलाई नहीं होती है, बिक्री ठप पड़ जाती है। इसके चलते कंपनियां कर्मचारियों की छंटनी करने लगती हैं। इससे अर्थव्यवस्था में बेरोजगारी बढ़ जाती है। बचत और निवेश में कमी कमाई की रकम से खर्च निकाल दें तो लोगों के पास जो पैसा बचेगा वह बचत के लिए इस्तेमाल होगा। लोग उसका निवेश भी करते हैं,बैंक में रखा पैसा भी इसी दायरे में आता है।लेकिन पिछले दो ढाई माह में सब कुछ ठप्प सा हो जाने के कारण लोगो की जमापूंजी भी स्वाह हो गई है।इस तरह की मंदी के दौर में निवेश कम हो जाता है क्योंकि लोग कम कमाते हैं। इस स्थिति में उनकी खरीदने की क्षमता घट जाती है और वे बचत भी कम कर पाते हैं। इससे अर्थव्यवस्था में पैसे का प्रवाह घट जाता है।कर्ज की मांग घट जाती है लोग जब कम बचाएंगे, तो वे बैंक या निवेश के अन्य साधनों में भी कम पैसा लगाएंगे। ऐसे में बैंकों या वित्तीय संस्थानों के पास कर्ज देने के लिए पैसा घट जाएगा। अर्थव्यवस्था को मजबूती देने के लिए कर्ज की मांग और आपूर्ति, दोनों होना जरूरी है। कुल मिलाकर देखा जाए तो अर्थव्यवस्था की मंदी के सभी कारणों का एक-दूसरे से ताल्लुक है। इनमें से कई कारण मौजूदा समय में हमारी अर्थव्यवस्था में मौजूद हैं। इसी वजह से लोगों के बीच आर्थिक मंदी का भय लगातार घर कर रहा है। आम लोगों के बीच मंदी की आशंका गहरी होती जा रही है।हो सकता है सरकार की नई नीतियां इसमे कोई सुधार ला पाए,लेकिन डॉ मनमोहन सिंह जैसे आर्थिक खैवया शायद ही कोई दूसरा पैदा हो।जो समय समय पर भारत के लिए वरदान सिद्ध हुए।उन्हें मेरा शत शत नमन।

वन नेशन, वन इलेक्शन

सबसे बड़ा लाभ यह होगा कि हमेशा चलने वाले चुनावों पर विराम लग जाएगा। सरकारों का ध्यान विकास कार्यों की ओर होगा। आचार संहिता की वजह से विकास कार्य ठप्प नहीं होंगे। और सबसे ऊपर हर बार चुनाव में होने वाले बेहिसाब खर्चों पर लगाम लगेगी। चुनाव आयोग से लेकर राजनीतिक दलों का चुनावों पर बेहिसाब खर्च होता है। एक साथ चुनाव से इन खर्चों में कटौती होगी। सुरक्षा बलों को भी लगातार इस राज्य से उस राज्य तक यात्रा करनी पड़ती है। आम लोगों का ध्यान भी चुनाव पर लगा रहता है। यह सब कुछ एक निर्णय से बदल जाएगा। देश सचमुच बदल रहा है। न सिर्फ बदल रहा है, बल्कि शक्तिशाली हो रहा है। लोकतंत्र सशक्त हो रहा है। वैश्विक स्तर पर देश का मान बढ़ रहा है। देश में आर्थिक और राजनीतिक स्थिरता आई है। अभी जिस समय देश संविधान अंगीकार करने के 75 साल पूरे होने का उत्सव मना रहा है, प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की सरकार ने एक और ऐतिहासिक निर्णय किया है। केंद्रीय मंत्रिमंडल ने एक देश, एक चुनाव' के लिए बनाए गए दो विधेयक को मंजूरी दे दी है। संसद के शीतकालीन सत्र में इसके लिए सरकार दो विधेयक पेश करेगी। इनके जरिए संविधान के अनुच्छेद 82ए, 83, 172 और 327 में संशोधन का प्रस्ताव रखा जाएगा। इससे लोकसभा और सभी विधानसभाओं के चुनाव एक साथ कराने और लोकसभा व सभी विधानसभाओं के कार्यकाल से जुड़े जरूरी बदलाव किए जाएंगे। केंद्र सरकार ने इससे पहले सितंबर में पूर्व राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद की अध्यक्षता वाली उच्चस्तरीय समिति की रिपोर्ट मंजूर कर ली थी, जिसकी सिफारिशों के आधार पर ये विधेयक तैयार किए गए हैं। श्री रामनाथ कोविंद की अध्यक्षता वाली समिति ने सभी संबंधित पक्षों के साथ विचार विमर्श किया था। उनकी समिति के सामने अनेक विपक्षी पार्टियों ने सारे चुनाव एक साथ कराने के प्रस्ताव का विरोध किया था, लेकिन ज्यादातर पार्टियां इस विचार के समर्थन में थीं। चुनाव आयोग और आम लोगों से भी समिति ने राय ली थी। इसके बावजूद सरकार अपने संपूर्ण बहुमत के दम पर एकतरफा तरीके से इन विधेयकों को नहीं पास कराने जा रही है। सरकार इस मामले में आम राय बनाने का प्रयास कर रही है। इसलिए संविधान संशोधन के विधेयक पेश करने के बाद उसे संयुक्त संसदीय समिति यानी जेपीसी को भेजा जा सकता है, जहां सभी पार्टियों के सांसद इस पर विचार करेंगे। यह समिति सभी संबंधित पक्षों से सलाह मशविरा करेगी और आम लोगों की राय भी लेगी। उसके बाद सहमति बना कर इसे पास कराया जाएगा। वैसे सरकार जब चाहती तब इसे पास करा सकती थी क्योंकि ये साधारण संशोधन हैं, जिनके लिए संसद में साधारण बहुमत की जरुरत है और राज्यों की विधानसभा से मंजूरी लेने की आवश्यकता नहीं है। फिर भी सरकार आम सहमति का रास्ता अपनाएगी। जिस समय श्री रामनाथ कोविंद की अध्यक्षता में समिति बनाई गई थी तभी से इसे लेकर कई तरह के सवाल उठ रहे हैं। विपक्ष पूछ रहा है कि इसका क्रियान्वयन कैसे होगा? अगर 2029 के लोकसभा चुनाव के साथ सभी राज्यों के विधानसभाओं के चुनाव कराने हैं तो अगले चार साल में होने वाले विधानसभा चुनावों का क्या होगा? यह भी पूछा जा रहा है कि अगर लोकसभा और सभी विधानसभाओं का कार्यकाल तय कर दिया जाएगा तो बीच में सरकार ने बहुमत गंवाया या सरकार गिरी तब क्या होगा? क्या वहां राष्ट्रपति शासन लगा रहेगा और अगले लोकसभा चुनाव के साथ ही वहां चुनाव होगा? वैसे इन सभी सवालों का जवाब सरकार की ओर से प्रस्तावित विधेयक में मिल जाएगा। परंतु अगर राजनीतिक पूर्वाग्रह छोड़ दें तो इन सवालों के जवाब बहुत मुश्किल नहीं हैं। कुछ विधानसभाओं के कार्यकाल बढ़ा कर और कुछ के कार्यकाल घटा कर सभी विधानसभाओं के चुनाव लोकसभा के साथ कराए जा सकते हैं। जहां तक बीच में सरकार गिरने का सवाल है तो पिछले काफी समय से मध्यावधि चुनाव का चलन समाप्त हो गया है। पिछले एक दशक से ज्यादा समय से दिल्ली के एक अपवाद को छोड़ दें तो किसी राज्य में मध्यावधि चुनाव की नौबत नहीं आई है। यह लोकतंत्र की परिपक्वता का प्रतीक है। फिर भी इस संभावना को देखते हुए सकारात्मक अविश्वास प्रस्ताव का प्रावधान किया जा सकता है। यानी सरकार गिरने के साथ ही नई सरकार बनाने का प्रस्ताव भी रखा जाए। इसके बावजूद अगर कहीं सरकार गिरती है और नई सरकार नहीं बनती है तो वहां बचे हुए कार्यकाल के लिए चुनाव कराया जा सकता है। अगर इतने बड़े ऐतिहासिक निर्णय पर अमल करना है तो छोटे छोटे कुछ अपवाद बनाने होंगे। विपक्ष की ओर से पहले दिन से इस प्रस्ताव का विरोध किया जा रहा है। विपक्ष का विरोध सिर्फ इस कारण से है कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने इसका प्रस्ताव किया है। विपक्ष को सरकार के हर प्रस्ताव और हर अच्छी पहल का विरोध करना है इसलिए वह विरोध कर रही है। विरोध में विपक्ष की ओर से ऐसे तर्क दिए जा रहे हैं, जिनसे खुद ही विपक्षी पार्टियां कठघरे में खड़ी होती हैं। कांग्रेस और दूसरी विपक्षी पार्टियां लोकसभा के साथ सभी राज्यों की विधानसभाओं के चुनाव को लोकतंत्र विरोधी बता रही हैं। प्रश्न है कि पूरे देश में एक साथ चुनाव कराना लोकतंत्र विरोधी कैसे है और अगर यह लोकतंत्र विरोधी है तो स्वतंत्रता के बाद करीब 20 साल तक चार लोकसभा चुनाव और सभी विधानसभाओं के चुनाव एक साथ कैसे हुए? क्या देश के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू और कांग्रेस के दूसरे नेता लोकतंत्र विरोधी कार्य कर रहे थे? ध्यान रहे आजादी के बाद 1952 में हुए पहले चुनाव से लेकर 1967 के चौथे चुनाव तक देश के सारे चुनाव एक साथ होते थे। उस समय भी अगर कांग्रेस पार्टी ने अपनी संविधान विरोधी सोच में गैर कांग्रेसी राज्य सरकारों को बरखास्त करना नहीं शुरू किया होता तो आगे भी एक साथ चुनाव की प्रक्रिया चलती रहती। लेकिन कांग्रेस को बरदाश्त नहीं हुआ कि राज्यों में उसको हरा कर गैर कांग्रेसी सरकारें कैसे बन गई हैं।

भारी ठंड के बीच श्रद्धालुओं ने लगाई आस्था की डुबकी

साल की आखिरी सोमवती अमावस्या पर गंगा स्नान को उमड़ी श्रद्धालुओं की भीड़

हरिद्वार । सोमवती अमावस्या का स्नान पर्व समोवार को मनाया गया वैसे तो सभी अमावस्या का महत्व होता है, मगर सोमवती अमावस्या सनातन धर्म में पुण्यदायी और जीवनदायी मानी जाती है। धर्मनगरी हरिद्वार में सोमवती अमावस्या पर गंगा स्नान करने के लिए श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ी है। भीषण ठंड के बावजूद श्रद्धालु गंगा में आस्था की डुबकी लगा कर पुण्य और मोक्ष की कामना कर रहे हैं। गंगा स्नान करने के लिए यहां पर दूर दूर से श्रद्धालु आये हैं। मान्यता है कि इस अवसर पर गंगा में स्नान करने से सभी कष्ट दूर होते हैं। मनोकामनाएं पूरी होती हैं और मोक्ष की प्राप्ति होती है। सैकड़ों अश्वमेघ यज्ञ के समान पुण्य की प्राप्ति होती है। इस अवसर पर पितरों के निमित पूजा करने से जीवन मे सुख और शांति आती है। पुलिस प्रशासन द्वारा सुरक्षा के व्यापक प्रबंध किए गए हैं। मेला क्षेत्र को जोन और सेक्टर में बांट कर अधिकारियों और पुलिसकर्मियों को तैनात किया गया है।

पंडित मनोज त्रिपाठी का कहना है कि वैसे तो सभी अमावस्या पर गंगा स्नान का महत्व है, मगर सोमयुता अर्थात सोमवती अथवा भोमयुता अथार्त भौमवती अमावस्या विशेष पुण्यदायी होती है। इसके पुण्य का इसी बात से पता लगा सकते हैं कि इस सोमवती अमावस्या की प्रतीक्षा में स्वयं भीष्म पितामह ने अपनी शरशैया पर पड़े रहते हुए इंतजार किया था। सोमवती अमावस्या के आने का सोमयुता अर्थात अक्षुण्य कर देने वाली अमावस्या आज के दिन है। मात्र जल स्नान करना व्यक्ति को अश्वमेघ यज्ञ के समान फल दे देता है। पंडित जी के अनुसार आज के दिन अपने पितरों के प्रति तर्पण, श्राद्ध आदि करना, पीपल के वृक्ष की पूजा करना, उसमें अपने पितरों की कामना करते हुए किसी भी प्रकार से 108 परिक्रमा कर ले और सूत लपेटे तो यह निश्चित समझिए कि व्यक्ति का कितना भी कठिनाईपूर्ण जीवन हो, वह सुधर जाता है। व्यक्ति की मनोकामना, इच्छितकामना पूर्ण हो जाती है। गंगा आदि पवित्र नदियों में हरिद्वार आदि तीर्थों में आज के दिन स्नान का अत्यधिक महत्व है। आज हर की पैड़ी पर स्थित ब्रह्मकुंड पर स्नान करके व्यक्ति अपने जीवन को कल्पकल्पान्तर तक के पाप नष्ट करके व्यक्ति मोक्ष को प्राप्त कर लेता है। आज जो दान करेंगे, जो पुण्य करेंगे वो अक्षय है। सोमवती अमावस्या व्यक्ति की पुण्यदायी और जीवनदायी है। वैसे तो स्नान पर्वों पर हमेशा ही लोगों की भीड़ हरिद्वार गंगा स्नान के लिए पहुंचती है। मगर आज सोमवती अमावस्या पर गंगा स्नान करने का मौका कोई नहीं छोड़ना चाहता है।

हर की पैड़ी पहुंचे श्रद्धालुओं का कहना है कि सोमवती अमावस्या के दिन गंगा स्नान करने से परिवार में सुख समृद्धि शांति तो आती है। सभी मनोकामना पूरी होती है और मोक्ष की प्राप्ति होती है। साथ ही पितरों की आत्मा भी तृप्त होती है और पुण्य की प्राप्ति होती है। मेला क्षेत्र को 14 जोन और 39 सेक्टर में बांटकर पुलिस कर्मियों की तैनाती की गई है, ताकि स्नान करने के लिए आने वाले श्रद्धालुओं को किसी तरह की कोई परेशानी का सामना न करना पड़े और वह सुरक्षित स्नान करके जा सकें। साथ ही ट्रैफिक को लेकर ट्रैफिक प्लान बनाकर लागू किया गया है ताकि हाईवे पर किसी तरह की जाम की स्थिति उत्पन्न न हो और वाहनों का आवागमन सुचारू रूप से हो सके।

धनपुरा गांव में मेडिकल स्टोर से पकड़ी प्रतिबंधित दवाइयां

हरिद्वार । पथरी क्षेत्र के गांव धनपुरा में एक मेडिकल स्टोर से पुलिस और एएनटीएफ की संयुक्त टीम ने छापेमारी कर नशे के लिए प्रयोग हो रही दवाइयों का जखीरा पकड़ा है। टीम ने मौके से मिले इंजेक्शन और दवाइयों को सील कर आरोप मेडिकल संचालक को गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी के खिलाफ एसडीपीएस की धाराओं में मुकदमा दर्ज कर जेल भेजा गया है। पुलिस के अनुसार पथरी थाना क्षेत्र के गांव धनपुरा एक मेडिकल स्टोर पर नशे के लिए प्रयोग होने वाली दवाइयों की बिक्री की शिकायत मिल रही थी। शनिवार देर शाम को शिकायत के आधार पर एएनटीएफ और पुलिस की संयुक्त टीम ने मेडिकल पर छापेमारी की। इस दौरान मेडिकल स्टोर से नशे के लिए प्रयोग होने वाली दवाइयों को पकड़ा गया। टीम को मौके से ट्रॉमाडोल के 66 इंजेक्शन, इसके अलावा 310 पत्ते नशे की गोलियां मिली है जो प्रतिबंधित दवाइयों में आती है। टीम ने सभी दवाइयों को सील कर दिया। एएनटीएफ उपनिरीक्षक रंजीत तोमर आरोपी मेडिकल स्टोर संचालक के खिलाफ हरिद्वार पुलिस को तहरीर दी है। तहरीर के आधार पर आरोपी के खिलाफ एनडीपीएस की धाराओं में मुकदमा दर्ज किया गया है। पुलिस ने आरोपी सहबान पुत्र दिलशाद निवासी धनपुरा को मेडिकल स्टोर से ही गिरफ्तार कर लिया है। टीम में फेरुपुर चौकी प्रभारी सुधांशु कौशिक, कांस्टेबल मुकेश, राजवर्धन, जयपाल चौहान आदि मौजूद रहे। एसओ पथरी रविन्द्र कुमार ने बताया मेडिकल स्टोर पर नशीली दवाइयों को बेचा जा रहा था। शिकायत में संयुक्त टीम ने कार्रवाई कर आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। कोर्ट में पेश करने के बाद आरोपी को जेल भेजा जाएगा।

गांव रानीमाजरा में हाथियों ने रौंदी किसानों की फसल

हरिद्वार । हरिद्वार ग्रामीण विधानसभा के गांव में हाथियों ने किसानों की गन्ने व गेंहू की फसलों को तहस-नहस कर दिया है। गंगा पार जंगलों से हाथियों का झुंड खेतों में आकर गन्ने की फसलों को नुकसान पहुंचा रहा है। किसानों ने वनप्रभाग से हाथियों को रोकने के ठोस उपाय की गुहार लगाई है। वही, पथरी के जंगल मे आये एक हाथी ने भी उत्पाद मचाया हुआ है। हाथी प्रतिदिन आबादी का रुख कर ग्रामीणों को दौड़ा रहा है। पिछले कई दिनों से हाथियों का झुंड जंगलों से गंगा पार कर मिस्सरपुर, किशनपुर, पंजनहेड़ी, ज्यापोता व अजीतपुर, बिशनपुर, कुंडी, रानीमाजरा, चांदपुर, कटारपुर, फेरुपुर, शाहपुर स्थित खेतों का रुख कर फसलों को नुकसान पहुंचा रहे है। किसान प्रतिदिन वनप्रभाग को फसलों के नुकसान के बारे में अवगत भी करा रहे है। किसान वन कर्मियों की गस्त बढ़ाने की मांग भी कर चुके है। किसान नूतन कुमार, राजकुमार, दीपक, सुनील, बबलू, प्रेमचंद, शुसील, रामकुमार, कुलदीप, रविन्द्र, सोनू, रमेश, मुनेश, कपिल, राजू, ने बताया शनिवार रात लगभग 10 हाथियों का एक झुंड रानीमाजरा स्थित खेतों में आ धमका ओर गन्ने की फसलों में जमकर उत्पात मचाया। हाथियों ने लगभग चार बीघा गन्ने की फसलों को नुकसान पहुंचाया है।

कांग्रेस पर टिकट बेचने के आरोप पुराने रिकार्ड की पुनरावृत्तिः चौहान

देहरादून । भाजपा के प्रदेश मीडिया प्रभारी मनवीर सिंह चौहान ने कांग्रेस कार्यकर्ताओ द्वारा पार्टी नेताओं पर टिकट बेचने के आरोपों को उसके पुराने रिकार्ड की पुनरवृत्ति बताया और कहा कि कार्यकर्ताओ की घोर उपेक्षा करने वाली पार्टी के लिए इसमें कुछ नया नही है। उन्होंने पीड़ित कांग्रेसियों से सहानुभूति जताते हुए तंज किया कि कांग्रेस नेतृत्व को हार का अंदाजा है, इसीलिए सब गड़बड़झाला हो रहा है। सोशल मीडिया में वायरल कांग्रेसी दावेदारों के वीडियो को पर प्रतिक्रिया देते हुए चौहान ने कहा इसे दुर्भाग्यपूर्ण और शर्मनाक करार हुए कहा कि यह कांग्रेस का यह काला सच है जो हर चुनाव में आम हो गया है। यही वजह है कि कांग्रेस हार का रिकॉर्ड बनाते हुए रसातल में जा रही है। लगातार कार्यकर्ताओ की उपेक्षा के चलते कांग्रेस का जो हस्र हुआ है कांग्रेस नेतृत्व और उनके गैरजिम्मेदार नेताओं ने इससे कोई सबक नहीं लिया है। यही वजह है सत्ता में रहते देश बेचने की आदत, अपनी पार्टी में भी टिकट बेचने की लत के रूप जारी है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस जानती है कि भाजपा की डबल इंजन सरकार के कामों से जनता बेहद खुश है और कांग्रेस प्रत्याशियों का जीतना दूर दूर तक संभव नही है। ऐसे में जिस तरह टिकट बेचने के आरोप सामने आ रहे हैं उससे तो यही लगता है कि निकाय चुनाव उम्मीदवारों के चयन पर बड़ा गड़बड़झाला किया जा रहा है। चौहान ने कहा कि यह कांग्रेस पार्टी का अंदरूनी मामला है, लेकिन राजनैतिक शुचिता के लिए इस तरह की घटनाएं उचित नहीं ठहराई जा सकती हैं। साथ ही तंज किया कि जो देश विदेश में संविधान समाप्त होने का झूठ फैलाते हैं वही अपनी पार्टी में लोकतंत्र का खून करने के आरोपों से घिरे हैं। भाजपा और जनता कांग्रेस नेतृत्व की सच्चाई को पहचानती है और अब कांग्रेस कार्यकर्ताओं को भी अहसास होने लगा है। उन्होंने पीड़ित कांग्रेस कार्यकर्ताओं से सहानुभूति जताते हुए कहा कि नकारात्मक और फर्जीवाड़े की राजनीति करने वालों को चुनावों में फिर सबक सिखाने का समय आ गया है।

आश्रम में घुसे गुलदार को सात घंटे बाद रेस्क्यू किया

हरिद्वार । कनखल के मानव कल्याण आश्रम में सुबह गुलदार की दस्तक से क्षेत्र में दहशत का माहौल बन गया। सूचना मिलने पर मौके पर पहुंची वन विभाग की टीम ने डॉ. अमित ध्यानी के नेतृत्व में गुलदार को ट्रेंकुलाइज किया। गुलदार को आश्रम से रेस्क्यू करने में टीम को सात घंटे का समय लग गया। रेस्क्यू के बाद वन विभाग की टीम गुलदार को पिंजरे ने कैद कर मेडिकल जांच के लिए चिड़ियापुर रेस्क्यू सेंटर ले गई। रविवार तड़के एक गुलदार लोगों को कनखल की सड़कों पर घूमता दिखा। जिसको देखकर लोगों में अफरा तफरी का माहौल बन गया। करीब सुबह छह बजे गुलदार शंकराचार्य स्वामी राजराजेश्वराश्रम के जगतगुरु आश्रम के समाने स्थित मानव कल्याण आश्रम में आ धमका। आश्रम में गुलदार के पहुंचने पर साधक और सेवादार आश्रम से बाहर की तरफ भाग खड़े हुए। गनीमत रही कि इस दौरान आश्रम के एक साधक ने गुलदार को एक छोटे दुछत्तीनुमा कमरे में बंद कर दिया। इसके बाद आश्रम प्रबंधन ने मामले की सूचना वन विभाग को दी। सूचना मिलने पर मौके पर पहुंची वन विभाग की टीम ने पहले तो जाल लगाकर गुलदार को पकड़ने का प्रयास किया। इसके बाद मौके पर पिंजरा लगाया गया। लेकिन गुलदार पिंजरे में भी नहीं फंसा। जिसके बाद गुलदार को बेहोशी का इंजेक्शन लगाने के लिए वन विभाग के डॉक्टरों की विशेष टीम को आश्रम में बुलाया गया।

स्वामी,मुद्रक व प्रकाशक अवनीश कुमार द्वारा भगवती प्रिंटर्स,इण्डस्ट्रियल एरिया, हरिद्वार से छपवाकर ग्रा. बसवाखेड़ी पो. मंगलौर, हरिद्वार (उत्तराखण्ड़) से प्रकाशित किया।
सम्पादकः अवनीश कुमार, मो0 9410553400
ई-मेलः liveskgnews@gmail.com
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र हरिद्वार न्यायालय में ही होगा)
सभी लेखों में सम्पादक की सहमति जरूरी नही है।